न्यायांभोनिधि श्रीमदाचार्य

आत्मारामजी (आनंदविजयजी)

विरचित

विधि विधान सहित

पूजा संग्रह.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता

मुनिराज श्रीमद् हंसविजयजी

जैन लाइब्रेरी.

मुंबई.

शान्ति सुधाकर प्रेस

विरात् संवत २४२७

सन १९०० संवत १९५६.

मूल्य रु. ०-१२-०

जैन पुस्तको विगेरे मळवानां ठेकाणां.

मुंबई—चीमनलाल सांकळचंद–शांति सुधाकर प्रेस (छापाखानुं) ठे० भींडीबजार शांती नाथजी महाराजना देरासरनी बाजुमां. (उमरखाडी पोस्ट–मुंबई.)

अमदावाद—जेशंगभाई मोतीलाल शाह-बुकसेलर एन्ड कमीशन एजन्ट-रीचीरोड.

अर्पण पत्रिका.

संघवीजी रुपचंद मोहनचंद.

मु० आमलनेर.

आप सुश्रावक होई जैन शासननी उन्नति करवा अहर्निश तत्पर रहो छो. ओणसाल मुनिमहाराज श्रीमद् हंसविजयजी आदे ४ ठाणा सह श्रीसंघने अंतरिक्ष पार्श्वनाथनो संघ कहाडी तीर्थयात्रा करावी तमाम रसोडा खर्च सुधां पोताना पदरनुं करी धननो खरो उपयोग कर्यो तथा दरेक घरवाळा श्रीसंघाळुने शालनी पहेरामणी करी पूरो जश लीधो. वळी आ पुस्तक बाहार पाडवामां आपे यथाशक्ति आ सभाने मदद आपवानुं जणावी जे उदारता दर्शावी छे तेनी यादगीरी माटे आ पुस्तक आपने निवेदन कर्युं छे ते स्वीकारशो.

जेशंगभाई मोतीलाल शाह.

ओ. से महावीरजिन मंडळी.

आभार पत्र.

शेठ रतनसीभाई कुंवरजीभाई आकोलावासी के जेओ प्रख्यात सामंत मालसीना वंसज छे तेमणे मुनि महाराज श्रीमद् हंसविजयजीना सद्धुपदेश थी आ दुष्काळ वर्षमां ऊमरावतीनो संघ कहाडी तथा आ पुस्तक छपाववामां रु. ५०) नी मदद करी छे तेथी तेमनो आभार मानवामां आवे छे.

शा. लालचंद मोतीचंद धुळीआवाळाए साधु साधवीने भेट आपवा माटे आ पुस्तकनी १००) नकल खरीद करी छे तेथी तेमणो पण आभार माणवामां आवे छे.

प्रस्तावना.

आ विषमकाळमां जैनागम अने जिनप्रतिमाना आलंबन शिवाय चार गति छेदी पंचमी (मोक्ष) गतिए पोहोंचवा बीजुं कांइ पण साधन छेज नहीं. जैनागमानुसार जिन प्रतिमानी पूजा करी परमात्माना शुद्ध स्वरूपनो भाव विचारी तेमां तल्लीन थइ पोताना आत्माने निर्मळ करी शुद्ध समकित प्राप्त करवाथी भव निस्तरण वेगे थाय ए निःसंशयात्मक हकीकत छे. तेना खरा उपायरूप भगवाननी राग रागिणी आदिमां पूजा भणावी मननी एकाग्रता करवी ए मुख्य साधन होवाथी न्यायांभोनिधि श्रीमदाचार्य आत्मारामजी (आनंदविजयजी) महाराजे बनावेल तमाम अनुक्रमणिकामां बतावेल पूजाओनो संग्रह तेना तमाम बिधि सहित अमोए आ पुस्तकमां यथामति संशोधन करी छपाव्यो छे, जेनो लाभ सर्व जैन श्रीसंघ लेइ अमोने कृतार्थ करशे एवी आशा छे छापतां सुधारतां न्यूनाधिक अक्षर मात्रा मींडी विगेरे जो कोइ मूल मालम पडे तो सुधारी वांचशो ए माटे क्षमा चाहीए छीए.

प्रसिद्ध कर्त्ता.

अनुक्रमणिका.

अर्हं.

अथ तपगच्छाचार्य श्रीश्रीश्री १००८ श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी प्रसिद्ध नाम आत्मारामजी महाराजजी विरचित पूजा संग्रह.

स्नात्रपूजा विधि.

प्रथम पूर्वदिशासन्मुख, अथवा उत्तरदिशासन्मुख, प्रतिमाजीका मुख होवे, उसतरेसें ऊपराऊपरी शुद्ध करके, धूपादिकसे पवित्र करी हुइ तीन चोकीयां, जलादिकसें शुद्ध करके, धूपादिकसें पवित्र करके, गुलाब केवडाप्रमुखके जलसे सुगंधित छंटकाव करके, पुष्पकी वृष्टि करी हुई भूमिमें स्थापन करनीयां. ऊपर प्रतिमाजी पधरावनेके-लिये सिंहासन स्थापन करना. यदि दो चोकीयां और तीसरा सिंहासन होवे तोभी कुछ हरजा नही. चोकीयोंके मध्यभागमें एक एक केशरका स्वस्तिक करना. उसके ऊपर चावल स्वस्तिककी तरेंहि रखने. उसके ऊपर नलेर, (श्रीफल,) सु-

पारी, आदि रखने. सिंहासनमें, अगर ऊपर रखी हुई परात आदिमें, दो स्वस्तिक केशरसें करके एकके ऊपर तीन नवकार पूर्वक पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करनी, उसके आगे दूसरे स्वस्तिकके उपर सिद्धचक्र स्थापन करने. स्नात्रका जल नीचे न गिरे जिसके लिये सिंहासनके पास पाणी नीकलनेकी टूटीके नीचे पीत्तलकी बाटी (त्रांबाकुंडी) रखनी. स्नात्र पूजा आदि संपूर्ण होया पिछे स्नात्रका जल जहां पैर जलके ऊपर न आवे वैसे स्थानमें गेरना. चोकीयोंके आगे एक पटडा (पाटला) अगर छोटी चोकी (बा-जोठ) शुद्ध पवित्र करके स्थापन करनी. उस चोकीके ऊपर लघतमार, (हारबंध,) दो अथवा चार स्वस्तिक करके ऊपर चावल पूरने. तिसके ऊपर सुपारी, वदाम, विगेरे रखनी. पीछे, निर्मल जल १, दूध २, दधि (दही) ३, गोका घृत ४, और मिसरी ५, यह पंचामृत बनाके बिचमें फुल, वरास, केशर, चंदन, आदि सुगंधित पदार्थ डालके शुद्ध निर्मल कलश (जितने स्वस्तिक किये होवे उतने कलश) पूर्वोक्त पचामृतसें भरे.

ऊपर रखने, कलशके पासेपर स्वस्तिक करने, और, गलेमें टूटीके साथ पेच (आंटी) पाके मौली (नाडा) बंधना चाहिये तिस कलशोंके ऊपरि शुद्ध अंगलूहणें तेह (घडी) करके स्वस्तिक करके रखने.

प्रतिमाजीके दाहणे (जमणे) पासे प्रतिमाजीकी नाशिकाके बराबर लाट (शिखा) आवे उस रीतिसें दीपक रखना. सो दीपक लालटेन (फानस) आदिमें रखना चाहिये. वामे (डाभे) पासे धूप रखना. सिंहासनके ऊपर चंद्रोया, वंदरवाल, (तोरण,) बांधना. भगवान्‌के ऊपर छत्र-धारण करना. इत्यादि विधि करे बाद दो अगर चार स्नात्री शुद्ध होके, घेहणें आदिकसें सुशोभित होके, तिलक लगाके, मुखकोश बंधके, हाथ धोके धूपादिकसें पवित्र करके, तीन तारकी मौली*

---

*प्रायः चौकी, (बाजोठ), सिंहासन, दीपक, रखनेकी दीवट, (दीवी), आरति, मगलदीपक, घडीआल, चामरकी दंडी, आदि जो जो स्नात्रमें काम लगे सर्वकों मौली बंधनी चाहिये—तथा पंचामृत, फल, नैवेद्य, केशर, कपूर, मौली, सुपारी बदाम, श्रीफल, घृत दीपकके वास्ते, चंदन, फूल, अंगलूहना, स्नात्रका नकरा, (नजराणा,) इत्यादि पूजा करावनेवालेको होवे.

(नाडाछडी) बांधके हाथ केसर आदिकसें चरचित करके खडे रहे. पीछे स्नात्र पढाना प्रारंभ करना, सो लिखते है.

स्नात्रपूजा.

दोहा.

वामासूनु पणमीए ।
श्रीशंखेश्वरपास ॥
स्नात्र रचू जिनवरतणा ।
जिम तूटे भवपास. ॥ १ ॥
अलंकार विकार विना ।
विधुवत् कमनीय अंग ॥
सहज उपाधिकमुक्त विभु ।
सोभे जीतअनंग. ॥ २ ॥

यह पढके प्रतिमाजीके अलंकार उतारने.

दोहा

बिंब भला जिनराजका ।
महिमा जास अपार ॥
कुसुमाभरण उतारीए ।
त्रिभुवनमोहनहार. ॥ ३ ॥

यह पढके निर्माल्य अर्थात् पहिले चढाये हुये फूलादि उतारने.

दोहा.

वालपणेमे सुरगिरौ ।
कनककलश भरि नीर ॥
करे स्नात्र सुराधिप ।
पाम्या भवजलतीर. ॥ ४ ॥
दिठा जिन जिनराजकों ।
धन्य जन्म हे तास ॥
नयन सफल पिण तेहना ।
सफल फली मनआस ॥ ५ ॥

यह पढकर प्रथम स्थापेल कलशोंकरके प्रतिमाजीका स्नात्र करणा. पीछे शुद्ध जलकेसाथ स्नान कराके, अंगलूहणा करके, चंदनपुष्पादिकसें पूजा करनी.

पीछे धोए हुए धूपादिकसें पवित्र करे हुए कलशोंमे स्नान करने योग्य सुगंधि पंचामृत पाके हारबंध रखने, उसके ऊपर शुद्ध वस्त्र ढक देना. पीछे सर्व स्नात्रीं हाथमें केशर, चंदन, धूप, पुष्प, चामर, आदि लेके हारबंध खडे रहे. एक स्नात्री *कुसुमांजलि लेके भगवान्के दाहणे (जमणे)

---

*धोके कोरे करे हूए सुगंधित फूल अथवा तिनके अभावे धोके कोरे करके केशर लगाए हूए अखडित अक्षत (आखे चावल)

पासे खडा रहे. पीछे नीचे मूजिब उच्चारण करे.

नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

दोहा.

अतिसयचउतीससंजुत ।
वाणीगुणपणतीस ॥
सो परमेसर देख भवि ।
त्रिभुवनकेरो ईस. ॥ १ ॥

कुसुमांजलि ढाल.

पार्वतीका पति जो कहीए, जिनपति पूजेफूलोंसें—यह चाल.

सर्व सुरेंद्र पूजे जिम तिम ।
कुसुमांजलि करो फूलोंसें-अंचलि ॥
पवित्र उदक लेई अंग पखाली ।
शुची वसनं[1] तनु[2] धारी रे ॥
आदिजिनंदके चरणकमलमे ।
कुसुमांजलि मनोहारी रे ॥
॥ कु० ३ सर्व० ॥ १ ॥

यह पढकर कुसुमांजलि चढावनी. कुसुमांजलिके साथ तिलक, पुष्प, धूप, आदि पूजाका विस्तार जाणना. सर्व कुसुमांजलिमें ऐसेहि समझना. इति प्रथम कुसुमांजलिः ॥ १ ॥

---

१ वस्त्र. २ शरीर.

नमोर्हत्०—दोहा

जो निजगुणपर्यव रमी ।
जस अनुभव इकरंग ॥
सहजानंदी शिवंकरु ।
अचलसरूप अनंग. ॥ २ ॥

कुसुमांजलि ढाल

रयणसिंहासन जिन थापीजे ।
आत्मगुणआनंदीरे ॥
शांतिजिनंदके चरणकमलमे ।
कुसुमांजलि सुखकंदीरे. ॥
॥ कु० ३ ॥ सर्व० ॥ २ ॥

यह पढकर कुसुमांजलि चढानी. इति द्विती-यकुसुमांजलिः ॥ २ ॥

नमोर्हत्०—दोहा.

निर्मल आत्मरूप करी ।
निर्मलगुणसोहंत ॥
निर्मल दीनी देशना ।
निर्मलभविजनसंत. ॥ ३ ॥

कुसुमांजलि ढाल

अगर कपूर धूप कर वासी ।
पूजो पुग्गलनिरासी रे ॥

नेमिजिनंदके चरणकमलमे ।
कुसुमांजलि सुखरासी रे ॥
कु० ३ । सर्व० ३ ॥

यह पढकर कुसुमांजलि चढानी. इति तृतीय कुसुमांजलिः ॥ ३ ॥

नमोर्हत्०—दोहा.

जे सिद्ध जे सीज्झसी ।
भविजन कर भवअंत ॥
जिनभक्ति विन कोइ नही ।
जय जय अमर अनंत. ॥ ४ ॥

कुसुमांजलि ढाल.

आत्मानंदी निजगुणसंगी ।
जगतउद्धारणहारा रे ॥
पास जिनंदके चरणकमलमे ।
जलथल फूल उदारा रे ॥
॥ कु० ३ । सर्व० ४ ॥

यह पढकर कुसुमांजलि चढानी. इति चतुर्थकुसुमांजलिः ॥ ४ ॥

नमोर्हत्०—

मुक्तिरमणीकारण विभु ।
भवदुखभंजनहार. ॥ ५ ॥

कुसुमांजलि ढाल

जिनके गुणका पार न पाऊं ।
जो मुझ तारणहारा रे ॥
वीर त्रिलोकीहितकर वंदु ।
कुसुमांजलि अघटारा रे॥
कु० ३ । सर्व० ५ ॥

यह पढकर कुसुमांजलि चढानी । इति पंचम-कुसुमांजलिः ॥ ५ ॥

नमोर्हत्०—दोहा

ऋषभदेव आदेकरी ।
वर्द्धमान परजंत ॥
वर्तमान चउवीस जिन ।
कलिमलसयलनिहंत ॥ ६ ॥

कुसुमाजलि ढाल

जगतारक चउवीस हि जिनवर ।
भविजनकमलदिनंदारे ॥
चउवीस जिनंदके चरणकमलमे ।
कुसुमांजलि शिवकंदारे. ॥
॥ कु० ३ । सर्व ० ६ ॥

---

१ ह्री
२

यह पढकर कुसुमांजलि चढानी । इति षष्ठकुसुमांजलिः ॥ ६ ॥

नमोर्हत्०—दोहा.

उत्कृष्ट पदे सयसत्तरि ।
विहरमान लाभंत ॥
चवणसमय इगवीस जिन ।
पूजो कलमलहंत ॥ ७ ॥
चार चार मेरु समंत ।
विहरमान जिन वीस ॥
भक्तिभावें पूजीए ।
पूरे संघ जगीस ॥ ८ ॥

कुसुमांजलि ढाल.

भूत भविष्य अनंत चउवीसी ।
वर्तमान जिनचंदारे ॥
आत्मानंदी सयल जिनंदकी ।
कुसुमांजलि करो नंदारे ॥
कु० २ । सर्व० ॥ ७ ॥

यह पढकर कुसुमांजलि चढानी. इति सप्तम कुसुमांजलिः ॥ ७ ॥

इति कुसुमांजलयः*

पीछे स्नात्री तीन खमासमण पूर्वक जगचिंतामणि चैत्यवंदन संपूर्ण जयवीयराय पर्यंत करे. पीछे मुखकोश बंधके हाथ शुद्ध करके धूपादिकसें पवित्र करके तीन खमासमण देके एक नवकार गिणके एक स्नात्री पंचामृतका कलश अंगलूहणेसें ढकके उपर फुल माला डालके हृदयके पास धारण करके खडा रहे. और सर्व स्नात्री धूप, चामरादि लेके खडे रहे. पीछे मिठे स्वरसें नीचे मुजब पढें. ॥

---

*प्रथम कुसुमांजलि वखत भगवानके चरणोपर तिलक पुष्पादि चढाने १, पीछे जानु (गोडे) २, पीछे हाथ ३, पीछे स्कंध ४, पीछे मस्तक ५, पीछे हृदय ६, पीछे नाभि ७, इस तऱ्हेसें सप्तम कुसुमाजलि पूर्ण करना

ढाल दुसरी

दोहा.

सकल जिनंद नमीकरी ।
कल्याणकविधिरंग ॥
जो भवि गावे रंगसे ।
अटल महोदय चंग ॥ १ ॥

कोयल टौक रही मधुवनमें, पास प्रभुजी वसे मोरे दिलमे.
कोयल०—यह चाल

सुपनमहोच्छव करो भवि रंगे ॥
मुक्तिरमणीसुख लहे भवि चंगे ॥
॥ सुपनमहोच्छव०—अंचलि ॥
समकित महाव्रत संजम पाली ।
वीसथानकतप विधिकरझाली ॥
तीर्थंकरपद बांधि उमंगे ।
भव तीजे शुभ दया दिलसंगे ॥ सु० १॥
एक भवांतर जिनपदसंगी ।
पंदर खेत्रमे नृपकुलचंगी ॥
आर्यदेशमे नृपपटराणी ।
अवतरे कुखमे जिन त्रिहंनाणी ॥ सु० २॥

सुखसिज्यामे माता देखे ॥
चउदस सुपन सुहंकर रेखे ॥
गजवर वृषभ सिंहवर कमला ।
फुलमाला विधु सूर्य हि अमला ॥ सु० ३॥
धजा कलस वलि पद्मसरोवर ।
रतनागर पयअतिहीविसाला ॥
भवन विमान रतनकी रासी ।
अग्निशिखा अति झाकझमाला ॥ सु० ४ ॥
पतिकों सुपन प्रकासें पति कहे ।
तीर्थंकर सुत त्रिभुवननंदा ॥
होसे सुणकर माता हरखी ।
आत्माराम जिनंद सुखकंदा ॥ सु० ५॥

इति द्वितीय ढाल

ढाल तिसरी

दोहा.

सुभलग्ने जिन जनमिया ।
त्रिभुवन भयो प्रकास ॥
नारकने सुख ऊपनो ।
भविजन पूरे आस ॥ १ ॥

वारि जाउंरे केसरिया सामरा, गुणगाउंरे. वारि०—यह चाल.

जन्ममहोच्छव गावोरे ।
भवताप निवारी ॥
॥ जन्ममहोच्छव०—अंचालि ।
उर्द्ध अधो दिशे अठ अठ आवे ।
सुंदररूप कुमारीरे ॥ भ० ॥ १ ॥
रुचक गिरि चउ दिसथी अठ अठ ।
चार विदिसि मध्य चारी रे ॥ भ० ॥२॥
अष्ट संवर्त्तक वात गंधोदक ।
अड जल भरी ले भृंगारीरे ॥ भ० ॥ ३ ॥
दर्प्पण[1] अष्ट अष्ट लेई चामर[2] ।
पंखा[3] अष्ट लेइ भारीरे ॥ भ० ॥ ४ ॥

---

१. इस समय आरीसा सामने धरना. २. इस समय चामर करना. ३. इस समय पंखा करना.

रत्नकूखधारिणि सुण माता ।
सोहमपति हुं सुरंगेरे ॥
तुम सुतकेरा ओच्छव करसुं ।
भय मतिकरी मन चंगेरे ॥ सुर० ॥ २ ॥
थापी प्रतिबिंब जिनवर लेइ ।
पंच रूप करी संगेरे ॥
पांडुक वनमे सिलासिंहासने ।
जिनवर लेइ ऊछंगेरे ॥ सुर० ॥ ३ ॥
शक्र विराजे त्रेसठ सुरपति ।
सुरगिरी मिले मनरंगेरे ॥
अच्युतपति तिहां हुकमज कीनो ।
हरख न मावे अंगेरे ॥ सुर० ॥ ४ ॥
सामग्री सकल मिलावो सुरवर ।
खीरनिधिजल गंगेरे ॥
ओच्छव करे जो जिनपतिकेरा ।
जन्मादिक दुख भंगेरे ॥ सुर० ॥ ५ ॥
मागध आदि तीर्थउदक वर ।
ओषधि मृतिका सुरंगेरे ॥
सूत्रे भाषी सर्व सामग्री ।

---

१ गोद (खोले) २ क्षीरसमुद्र

ढाल चउथी.

दोहा.

जन्म्या जिन जननीघरे ।
कंपे आसन सार ॥
दाहिणउत्तरनायके ।
जान्यो यह अधिकार ॥ १ ॥
घंटानाद बजायके ।
करे सुघोषण सार ॥
सुरगिरि मिलि सब आवजो ।
जन्ममहोच्छवकार ॥ २ ॥

राग—भैरवी.

लागी लगन कहो कैसें छूटे प्राणजीवन०—यह चाल.

सुरपति सगरे जिनपतिकेरा ।
करे महोच्छव रंगेरे ॥
॥ सुरपति सगरे०—अंचलि ॥
सब सुरवर मिलि सुरगिरि आवे ।
सोहमपति चित चंगेरे ॥
बहु परिवारें जन्मनगरमें ।
जिनपति नमत ऊमंगेरे ॥ सुर० ॥ १ ॥

---

१. दक्षिण. २ इस समय घट घडीआलादि बजाने, ३. इंद्र.

रत्नकूखधारिणि सुण माता ।
सोहमपति हुं सुरंगेरे ॥
तुम सुतकेरा ओच्छव करसुं ।
भय मतिकरी मन चंगेरे ॥ सुर० ॥ २ ॥
थापी प्रतिबिंब जिनवर लेइ ।
पंच रूप करी संगेरे ॥
पांडुक वनमे सिलासिंहासने ।
जिनवर लेइ ऊछंगेरे[१] ॥ सुर० ॥ ३ ॥
शक्र विराजे त्रेसठ सुरपति ।
सुरगिरी मिले मनरंगेरे ॥
अच्युतपति तिहां हुकमज कीनो ।
हरख न मावे अंगेरे ॥ सुर० ॥ ४ ॥
सामग्री सकल मिलावो सुरवर ।
खीरनिधि[२]जल गंगेरे ॥
ओच्छव करे जो जिनपतिकेरा ।
जन्मादिक दुख भंगेरे ॥ सुर० ॥ ५ ॥
मागध आदि तीर्थउदक वर ।
ओषधि मृतिका सुरंगेरे ॥
सूत्रे भाषी सर्व सामग्री ।

---

१ गोद (खोले) २ क्षीरसमुद्र

मेली अधिक उमंगेरे ॥ सुर० ॥ ६ ॥
अडजातिना कलश प्रतेके ।
अडअड सहस सुचंगेरे ॥
चउसठ सहस ही इक अभिषेके ॥
अंढीसें[1] गुणा सर्वगेरे ॥ सुर० ॥ ७ ॥
ईसानइंद्र ले खोले प्रभुने ।
सोहमपति मनरंगेरे ॥
वृषभरूप करी शृंगे जल भरी ।
न्हवण करे प्रभुअंगेरे ॥ सुर० ॥ ८ ॥
आत्मआनंद जन्म सफल कर ।
गावे गीत सुरंगारे ॥
भवसंतापनिवारणहारा ।
जिनपतिमज्जन चंगारे ॥ सु० ॥ ९ ॥

इति चतुर्थ ढाल.

पीछे पंचामृतसें भरे हूए कलशोंसें स्नात्र करावणा और नीचे मूजिब पढना.

---

१ सर्व मिलाके १६००००००.

ढाल पंचमी.

राग—कमाच

कलश इंद्र भर ढारे ।
जिनंद पर कलश इंद्र०—अंचलि ॥
हाथोहाथ हि सुरवर लावत ।
खीरविमलजलधारे ॥ जि० ॥ १ ॥
सुरवनिता मिल मंगल गावे ।
आनंद हरख अपारे ॥ जि० ॥ २ ॥
गंधर्वकिन्नरगण सब करते ।
गीतनृतस्वरतारे ॥ जि० ॥ ३ ॥
देवदुंदुभि मनहर वाजे ।
बोले जयजयकारे ॥ जि० ॥ ४ ॥
आत्मआनंद पदके दाता ।
जगजीवन हितकारे ॥ जि० ॥ ५ ॥

इति पचम ढाल

संपूर्ण पंचामृतसे स्नात्र कराए वाद स्वच्छ जलसें स्नान कराके अंग लूहणे करके चंदन केशर धूपादिकसे पूर्वसे अधिकतर पूजन करना. पीछे स्नात्री धूप चामरादि करे, और नीचे मूजिव पढे.

—००:०:००—

ढाल छट्टी.

—०-०:०:०-०—

दोहा

पुष्पादिकसें पूजके ।
करि बहू मंगलमाल ॥
रच संगीत सुहावना ।
सुघर बजावे ताल ॥ १ ॥

राग—कमाच, तराना.

नाचत शक्रशक्री ।
हे री माइ नाचत शक्रशक्री ॥
छंछंछंछंछननननन ।
नाचत शक्रशक्री ।
हे री माइ नाचत शक्रशक्री–अंचलि ॥
श्री ही धृति कीर्ति बुद्धि बहु बनी ठनी ।
इंद्र हि इंद्राणी करे नाटक संगीत धुनी ॥
जयजय जिन जगतिमिरभानु तूं ।
चरण धुंगरी छननननन ॥ माइ० ॥ १ ॥
धौं धौंधपमप मादल करत धुनी ।
सुंदर रंगीली गोरी गावत जिनंदगुनी ॥
धन्य कृतपुन्य हम जन्म सफल अज ।

भेटे भवदुख तुम चरनननननन ॥ मा० ॥ २ ॥
त्रौ त्रौं त्रिक त्रिक वेणु वीणा त्रांत्रिक ।
भामरी फिरत गावे गीत मातु मधुपिक ॥
चारगतिभ्रमण मिटावे भवि जनकों ।
तेरे विन नही कोइ सरनननननन ॥ मा०॥३॥
करके संगीत सुद्ध करमसे करी जुद्ध ।
माताकर सोंप बुध वचन उचारे सुद्ध ॥
सुत तुम स्वामी हम जतनसें राखजो ।
जनममरणदुखहरनननननन ॥ मा० ॥ ४ ॥
बत्ती कोडी कनक वसन मणि माणकुं ।
वृष्टि करे पुन्य भरे रिद्धिसिद्धि दाणकुं ॥
आत्मआनंद भरी दीप नंदीसरे जाइ ।
करके अठाइ गए सदनननननन ॥ मा० ॥५॥

—०—

अथ कलश.

राग—ठुमरी.

गिरनारीकी पहारी पर कैसे गुजरी—यह चाल.

जिनजन्ममहोच्छव जयकारी ।
जयकारी रे देवा जयकारी ॥ जि०—अंचलि ॥
दीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक ।
नित नित उच्छव चित धारी ॥ जि० ॥ १ ॥
जंबूदीपपन्नतीए भाष्यो ।
जन्ममहोच्छवविधि सारी ॥ जि० ॥ २ ॥
ते अनुसार संखेप रूपसें ।
जिनगुण गाया कुमत छारी ॥ जि० ॥ ३ ॥
तपगच्छगगनमें दिनमणि सरिसा ।
विजयसिंह प्रभु गणधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥
सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम ।
पद्म रूप कीर्त्ति भारी ॥ जि० ॥ ५ ॥
श्रीकस्तूर मणि बुद्धि विजया ।
आत्मरूपआनंदचारी ॥ जि० ॥ ६ ॥
खं सर अंक इंदु (१९५०) सुभ वर्षे ।
झंडिआले मास रहे चारी ॥ जि० ॥ ७ ॥

संघके आग्रहसें करी रचना ।
जिनकल्याणक अघटारी ॥ जि० ॥ ८ ॥

इति कलश.

पीछे आरती मंगलदीपक और लूण उतारना, सो विधि लिखते हैं. प्रभुके आगे पडदा करके प्रभुके सन्मुख बैठके आरति करनेवालेके नव अंगमे कुंकुम (रोले) के अगर केशरके तिलक करने. पीछे एक थालमें आरति, और सज्जे (जिमणे) पासे मंगलदीपक स्वस्तिक करके रखना जिसमे आरतिमें थोडा घृत पावणा, और मंगलदीपक पूर्ण भरना. ओर पीछे एक रकेबीमें लूण और पाणी लेके आरतिकी तरें उतारना और नीचे मूजिब पढना.

अथ लूण पाणी उतारण ढाल.

मन मोह्या जंगलकी हरणीने–यह चाल.

भवि नंदो जिनंदमतकरणीने.–अंचलि ॥
जिनवरअंगे लूण उतारी ।
पापपंक सब हरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥
विमलउदकत्रिणधार करीने ।
लूण अग्नि पर धरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥
तडतड करी जिम लूणज फूटे ।
तिम तुम पाप विदरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥

(यह पढकर लूणकों अग्निशरण करना. पीछें थालीमें अगर रकेबीमें लूण और पाणी लेके आरतिकी तरेंहि उतारना और नीचे मूजिब पढना.)

नयनकचोले दयारसभीने ।
गयो लूण जलसरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥
जो जिन ऊपर करे मन भेली ।
लूण जेम जाय गरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥
अगरकुंधरुधूप सुगंधी ।
करे भवसागर तरणींनें ॥ भ० ॥ ६ ॥

आत्मअनुभवरसमें भीनो ।
आनंदमंगल भरणीने ॥ भ० ॥ ७ ॥

इति लूणपाणी उतारण ढाल

यह पढकर लूणकों जलशरण करना. पीछे थालमें रखे हुए आरति मंगलदीपककी केशर, फूल, चावलसें, पूजा करनी. ऊपर कुंकुमके छिट्टे डालने. पीछे मंगलदीपक जालना. उस मंगलदीपकसे आरति सिलगावनी. पीछे मंगलदीपक नीचे चोकी (बाजोठ) ऊपर रखके आरति उतारनी, सो पाठ लिखते हैं

अथ आरती.

चाल—डागरीयांकी.

करुं जिनआरतियां सुरंगसें ।
करुं जिनआरतियां ॥
सकल मनोरथ सफल हुए मम ।
करुं जिनआरतियां—अंचलि ॥
रतनकनकमय थाल हि ल्यावो ।
कर सुभ भारतियां[1] ॥ सुरंगसें कर० ॥

---

1 बुद्धि

आरति उतारो जिनवर आगे ।
अघ सब छारतियां ॥ अघ० सु० स०॥१॥
सात चौद एकवीस वार करी ।
करम विदारतियां ॥ सुरंगसें करम० ॥
त्रिण त्रिण वार प्रदक्षिणा करीने ॥
जनम कृतारतियां ॥ जनम० सु० स० ॥२॥
जिम जिम जलधारा देइ जंपे ।
कंपे मारतियां ॥ सुरंगसें कंपे० ॥
बहुभवसंचित पाप पणासे ।
भववन जारतियां ॥ भव० सु० स० ॥ ३ ॥
द्रव्यपूजासें भाव सुहंकर ।
आतम तारतियां ॥ सुरंगसें आतम० ॥
जिनवर सम नही तीन भवनमें ।
इम कहे आरतियां ॥ इम० सु० स० ॥४॥

इति आरती.

पीछे मंगलदीपक उतारना सो लिखते है.

---

१ छारदीए अर्थात् दूर करदीए २ फाडदीए ३ कृतार्थ. ४ कामदेव ५ भग जावे. ६ जाल दीया.

अथ मंगलदीपक.

राग—जोग

मंगलदीपक सारा रे।
मनमोहनगारा ॥ मंगल०—अंचलि ॥
भुवनप्रकासक जिन चिर नंदो।
अष्टादश दोष जारा रे ॥ मन० ॥ १ ॥
चंद सूर तुम मुखना लूंछण।
फिरता करे नित्य वारा रे ॥ मन० ॥२॥
इंद्राणी मंगलदीपक कर।
भ्रमरी दीये रंग भारा रे ॥ मन० ॥३॥
जिम जिम धूपघटी अति दहके।
तिम तिम पाप जरा रे ॥ मन० ॥ ४ ॥
उदकाक्षतकुसुमांजलिचंदन।
धूपदीपफल सारा रे ॥ मन० ॥ ५ ॥
नैवेद्य वंदन जिनवर आगे।
करो निज आत्मप्यारा रे ॥ मन० ॥ ६ ॥

इति मंगलदीपक.

पीछे संक्षेपसें अष्ट प्रकारी पूजा करनी, यदि न होवे तो शेष फल, फूल, नैवेद्य, जो होवे सो चढा देणा. पीछे गीत गुण गाने जयजय शब्द उच्चारने. देवद्रव्यकी वृद्धि करनी, यथाशक्ति दान देणा.

इति तपगच्छाधिराज श्रीश्रीश्री १००८ श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराजजीकृत स्नात्रपूजा ॥

॥ अथ महोत्सवसहित अष्टप्रकारी पूजा विधि ॥

॥ आठ वाटकी केशरनी, आठ थाल नैवेद्यना, आठ थाल अक्षतना, आठ रकेबी फूलनी, आठ कल श रूपाना पंचामृत सहित, आठ दीवी कोडियां सहि त, आठ धूपधाणां, आठ थाल फलना ॥

जघन्यथी अक्षत, शालि, व्रीही, गहु, जुगंधरी, मग, अडद, मुक्ताफल, चोला तथा फल जे मले ते सर्व जातिनां लेइयें. अने ओखर न करती होय एवी गायनुं घृत दीपक सारु लाविर्ये तथा सरस धूप भेलो करी राखियें, अने सुखडी पण सर्व जातिनी लावीने जूदा जूदा भाजनमां राखीयें, ए सर्व वस्तु देरासरथकी एकशो अथवा दोढशो हाथ दूर घर होय त्यां मूकीयें ते सर्व चीजनी पासें एक चतुर पुरुषने बेसाडीये. शक्तिप्रमाणें आगले दिवसें जलया त्रा करियें, विधिसहित जल लाविर्ये ते पण तेहिज घरमां राखिये पछी इंद्राणी आठ कल्पिये. अने आ ठ स्नात्रिया न्हवराविर्ये पछी पंच शब्द वाजित्र

वाजते पूर्वोक्त वस्तुओ लइ आवीने पूजा भणाविर्ये पूर्वें स्नात्र भणाव्युं न होय तो ते वखत भणा वीयें. पछी वाजते गाजते आठ स्त्रियो, जे घरमां पाणीना कलश मूक्या होय त्यां लेवा जाय अने त्यां जे पुरुष बेसाड्यो छे, ते तेने आपे. ते लेइ आवीने उभी रहे. पछी तेमनी पासेंथी श्रावक कलशो लेइने उभा उभा पूजा भणावे ॥

॥ अथ अष्टप्रकारीपूजाध्यापन विधिः ॥

१ प्रथम स्नात्र करी, उज्ज्वल धोयेलां वस्त्र प हेरी, एक पटे वस्त्रनो उत्तरासंग करी, मुखकोश बांधी, केशर चंदन बरास घसीये अने जूदा केशर थी पोताने ललाटें तिलक करिये. ते करी नि र्माल्य उतारी मोरपींछीथी अथवा निर्मल सुको मल वस्त्रथी जयणाये करी प्रणामपूर्वक जिनबिंब प्रमार्जी, बन्ने हाथने धूप आपी, पवित्र रकेबीमां केशरनो स्वस्तिक करी निर्मल जलें भरेलो कल श रकेबीमां राखी रकेबी हाथमां लेइ प्रभु आगल उभा रहीयें. पछी पहेली पूजानो पाठ भणी, छेल्लो मंत्र कही, जलपूजा कर.

२ पछी पखाल करी, अंगलुहणाथीं लुहीनें केशरनी कचोली रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लइ बीजी पूजानो पाठ भणी मंत्र कही, चंदन पूजा करे.

३ एमज त्रीजी पूजामां फूल चढावे.

४ पछी चोथी पूजामां धूपधाणुं रकेबीमां राखी हाथमां लेइ पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी प्रभुनी डावी बाजु धूप उखेवे.

५ पछी पांचमी पूजामां मौलीसूत्र प्रमुखनी वाट करी, निर्मल सुगंधीत घृतथी दीपक भरी रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लेइ पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुजीनी जमणी बाजुयें दीपक राखी उपर टीको करे.

६ पछी छठी पूजामां उज्ज्वल अखंड अक्षत रकेबीमां नाखी, रकेबी हाथमां धरी पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुजी आगल स्वस्तिक तथा तांदुलना त्रण पुंज करे.

७ पछी सातमी पूजामां मोदक, मिश्री, खा जां, पतासां प्रमुख अनेक उत्तम पक्वान्न रकेबीमां

नाखी, रकेबी हाथमां धरी पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभु आगल नैवेद्य धरे.

८ पछी आठमी पूजामां लविंग, एलचीं, सोपारी, नालियेर, बदाम, द्राख, बीजोरां, दाडिम, नारिंगी, आंबां, केलां प्रमुख सरस सुगंधित रमणीय फल, रकेबीमां राखी रकेबी हाथमां धरी, पूजानो पाठ कही छेल्लो मंत्र भणीने प्रभु आगल फल धरे.

॥ पछी पूजानो कलश कही, विधिसंयुक्त स्नात्रीओ प्रभुजीथी अंतर पट करी, हाथमां आरति ले अने बीजा स्नात्रीयापासें प्रभुने नव अंगें तिलक करावी, अंतरपट दूर करी "नमो अरिहंताणं॰" कही, आरति कहे. पछी निर्धूम वर्त्ति॰ तथा तुभ्यं नमस्त्रिभुवन॰ ए काव्य, भक्तामरनां प्रभातें कहे. पछी जय जय शब्द करे, गुणगीत करे, चैत्यवंदन करे, साहामिवात्सल्य करे. यथाशक्ति दान आपे ॥ इत्यष्ट प्रकारीपूजा विधिः ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

अथ न्यायांभोनिधि मुनि श्रीमद् आत्माराम
आनंदविजयजी विरचित

॥ अष्टप्रकारी पूजा प्रारभ्यते

दोहा

जिनवर वाणी भारती ।
दारति तिमिर अज्ञान ॥
सारति कविजन कामना ।
वारति विघ्ननिदान ॥ १ ॥
चिदानंद वन सुरतरु ।
श्री शंखेश्वर पास ॥
पदकज प्रणमी तेहनां ॥
आणी भाव उलास ॥ २ ॥
पूजा अष्टप्रकारनी ।
अंग तीन चित धार ॥
अग्र पंच मनमोदसें ।
करि तरियें संसार ॥ ३ ॥

न्हवण विलेपन सुमनवर ।
धूप दीप अति चंग ॥
वर अक्षत नैवेद्य फल ।
जिन पूजन मन रंग ॥ ४ ॥
उज्ज्वल विमल वसन धरी ।
शुचि तनु मन जिन राग ॥
उतरासंग मुखकोशको ।
बांधी सुभग सोभाग ॥ ५ ॥
अधिक सुगंध जलें भरी ।
कंचन कलश अनूप ॥
नर नारी भक्तें करी ।
पूजे त्रिभुवन भूप ॥ ६ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा प्रारंभ ॥

राग—मालकोश.

न्हवण करो जिनचंद ।
आनंदभर ॥ न्हवण० ॥ ए आंकणी ॥
कंचन रतन कलश जल भरकें ॥
महके वास सुगंध ॥ आ० ॥ १ ॥

सुरगिरि उपर सुरपति सघरे ॥
पूजे त्रिभुवन इंद ॥ आ० ॥ २ ॥
श्रावक तिम जिन न्हवण करीने ॥
काटे कलिमल फंद ॥ आ० ॥ ३ ॥
आतम निर्मल सब अघ टारी ॥
अरिहंत रूप अमंद ॥ आ० ॥ ४ ॥

दोहा

जलपूजा विधिसें करे ।
टरे करममल वृंद ॥
हरे ताप सब जगतकी ।
करे महोदय चंद ॥ १ ॥

अथ गीतं

राग–जयजयवंती

सुरगण इंद मधुर ध्वनि छंद ।
पठन करी करे न्हवण जिनंदा ॥
मागध वरदायने परभासा ।
अपर तरंगिनी उदक असंदा ॥ १ ॥
क्षीरोदधि अडजाति कलशभर ।
न्हवण करे जिम चोशठ इंदा ॥

तिम श्रावक जिन भक्तीरंगें ।
न्हवण करे जरे करमको कंदा ॥ सुर० ॥ २ ॥
विप्रवधू सोमेश्वरी नामे ।
जल पूजनसें लहे महानंदा ॥
कारण कारज समज भलीपरें ।
आतमअनुभव ज्ञान अमंदा ॥ सुर० ॥ ३ ॥

अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति प्रथम पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

कुमति कुवास निरासिनी ।
वासिनि चिद्घन रूप ॥
भासिनि अमर अनघपद ।
नाशिनि भव जलकूप ॥ १ ॥
सुरपति जिन अंगे करे ।
सरस विलेपन सार ॥
श्रावक तिम लेपन करे ।
चंदन घसि घनसार ॥ २ ॥

राग—जिल्ह काफी.

कर रे कर रे कर रे कर रे ।
श्रीजिनचंद विलेपन कर रे ॥
श्रीजि० ॥ ए आंकणी ॥
चेतन जान कल्याण करनकों ।
आन मिल्यो अवसर रे ।
शास्त्र प्रमाण जिनंदजी पूजी ।
मन चंचल स्थिर कर रे॥ श्रीजि० ॥ १ ॥
सरस चंदन केशर हरिचंदन ।
घसी घनसार सुधर रे ॥
कनक रतन जरी भरी रे कचोरी ।
मन वच तनु शुचि कर रे॥ श्रीजि० ॥ २ ॥
चरण जानु कर अंश शिरोपर ।
भालकंठ प्रभु उर रे ॥
उदर तिलक नव कर जिनवरके ।
आतम आनंद भर रे॥ श्रीजि० ॥ ३ ॥

दोहा.

शीतल गुण जिनमें वसे ।
शीतल जिनवर अंग ॥
आतम शीतल कारणें ।
पूजो अरिहंत रंग ॥

॥ अथ गीतं ॥

राग—कसूरी जंगलो.

सिद्धि वधू लइ रे।
जिनरंग राची ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥
हरिचंदन घनसार सुमन हर रे।
द्रव्य तिलक नव दइ ॥ जि० ॥ १ ॥
अचल सुरंगी सुमन गुण भृंगी रे।
भावतिलक शिर भइ ॥ जिन० ॥ २ ॥
पूजक चार तिलक करि अंगें रे।
पूजे अति हरखइ ॥ जि० ॥ ३ ॥
जयसुर शुभमति जिनवर पूजी रे।
दंपती शिवपद लइ ॥ जि० ॥ ४ ॥
आतमानंदी करम निकंदी रे।
आनंदरस रंग मइ ॥ जि० ॥ ५ ॥

अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय कुसुमपूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

त्रीजी पूजा सुमनकी ।
सुमन करे भवि रंग ॥
पंचबाण पीडा हरे ।
भावसुगंधि अभंग ॥ १ ॥

राग—धन्याश्री.

(अब मावडी गिरि जान दे ।
मेरा नेमजीसे काम है ॥ ए देशी ॥)

अब भविक जन जिन पूज ले ।
जिम सुधरे सघरे काम रे ।अब ।एआंकणी॥
अतिही सुगंधी कुसुम लीजें ।
खरचीने बहु दाम रे ॥
मोघरा चंपक मालती ।
केतकी पाडल आम रे ॥ अब० ॥ १ ॥
जासुल प्रियंगु पुन्नाग नागं ।
दाउदी वरनाम रे ॥
मचकुंद कुंद चंबेलि ले,
जे उगियां शुभ थान रे ॥ अब० ॥ २ ॥

सदा सोहागन जाइ जुइ ।
बोलसिरी शुभ ठाम रे ॥
लही कुसुम जिनवर देवने ।
पूजो जरे जिम काम रे ॥ अब० ॥३॥
शुभ सुमन केरी माल गुंथी ।
जिनगले धरी जाम रे ॥
आतम आनंद सुहंकरु ।
जिम मिले शिववधूधाम रे ॥अब०॥४॥

दोहा.

सुभग अखंड कुसुम ग्रही ।
दूर करी सब पाप ॥
त्रिभुवन नायक पूजियें ।
हरे मदन संताप ॥

—०○○०—

॥ अथ गीतं ॥

श्रीराग वा कालिंगडो.

(मंगल पूजा सुरतरु कंद ॥ मं० ए देशी ॥)

जिनवर पूजा शिवतरु कंद ॥ जिनवर०
ए आंकणी ॥

दमनक मरुवो बकुल केवडो ।
सरस सुगंधित अति महकंद ॥ जि० ॥१॥
कुसुमार्चन भवि करो मन रंगें ।
ताप हरे प्रभु जिनवरचंद ॥ जि० ॥२॥
विषयि देवकों आक धत्तुरा ।
पूजे नरवायस मतिमंद ॥ जि० ॥ ३ ॥
वणिक धुआलीलावती पूजी ।
फूलें जिनवर हरि भव फंद ॥ जि०॥४॥
आतम चिद्घन सहजविलासी ।
पामी सतचिद् पद महानंद ॥ जि० ॥५॥
अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥
जिनेंद्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा॥इति तृतीयपूजा॥३॥

॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

कर्मेंधनके दहनकों ।
ध्यानानल करि चंड ॥
द्रव्य धूप करि आतमा ।
सहज सुगंधित मड ॥

राग पीलू अथवा बरवा.

धूप पूजा अघ चूरे रे भविका ।
धूप पूजा अघ चूरे ॥
एतो भव भय नासत दूरें रे. ।भ०॥ए आंकणी॥
कृष्णागर अंबर घनसारे ।
तगर कपूर सनूरे ॥
कुंदरु मृगमदतुरक सुगंधि ।
चंदन अगर सचूरे रे ॥ भविका० ॥१॥
ए सब चूरण करी मनरंगें ।
भंगे करम अंकूरे ॥
नव नव रंगी शुद्धदशांगी ।
जिनवर आगें अदूरें रे ॥ भविका०॥२॥
धूपदान कंचनमणि रत्नें ।
जडित घडित अति पूरे ॥
निर्धूम पावक अति चमकंती ।
जिनपतिको कर तुं रे ॥ भविका०॥३॥
जिनवर मंदिरमें महमहती ।
दशदिग् सुगंध पूरे ॥
आतम धूप पूजन भविजनके ।
करम दुर्गंधने चूरे रे ॥ भवि० ॥ ४ ॥

दोहा.

धूपदान निज घट करी ।
जिनभक्तीवर धूप ॥
करम कुगंधी मिट गइ ।
पूजे आतमभूप ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

राग—खमाचका तिलाना.

पूजित आनंद कंद री हेरी माई ॥ पूजित०
ए आंकणी ॥
जिनप जिनंद चंद । पूजे सुर नर वृंद ॥
सेवत अनूप धूप । मिटे दुर्गंध रूप ॥
जिनवर अंध भ्रम । तिमिरभानु तुं ॥
मरन हरन तुम । चरनननन ॥ पूजित० ॥१॥
दश अंग धूप खेवी । दशही निदान सेवी ॥
सुभग सुरंगी रंगी । मुगती वधूटी लेवी ॥
जिनवर सेवी हम । ऊर्ध्व अभंग गति ॥
तिम तुम गति जिन । अरचनननन ॥ पू०२॥
सिद्ध बुद्ध अजर । अमर अज निर्मल ॥
कालवेदी भव छेदी । दूर करी कलमल ॥

एसा महानंद पद । धूप पूजा फल करे ॥
अखय भंडार भरे । कोन करे वरनननन ॥धू०३
वाम अंगें धूप करी । पूजी मन शुद्ध करी ॥
चार गति दुःख हरी । आत्म आनंद भरी ॥
विनयंधर नृप सात । भव सिद्धि वर ॥
नहिं कोइ तुम विन । सरनननन ॥धू० ॥४॥
काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीपकपूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

पंचमि पूजा जिन तणी ।
पंचमि गति दातार ॥
दीपकसें प्रभु पूजियें ।
पामीयें केवल सार ॥ १ ॥

राग—सिंध काफी

पूजो अरिहंत रंगें रे ।
भवि भाव सुरंगें ॥ पूजो०॥ ए आंकणी०॥
दीपक ज्योति बनी नवरंगी ।
जिनजीके दाहीण अंग ॥

रयण जडित चमकत शुभ रंगें ।
गोघृत भरी अति चंग रे ॥ भवि०॥१॥
करुणा रससें धरी शुभ फानस ।
मरत न जेम पतंग ॥
झगमग ज्योती सुंदर दीपे ।
अनुभव दीप अभंग रे ॥ भवि० ॥२॥
जिन मंदिरमें दीप प्रगट करी ।
भावना शुद्ध मन रंग ॥
ध्यान विमल करतां अघ नासे ।
मिथ्या मोह भुजंग रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥
दीप दरससें तस्कर नासे ।
आतम तिमिर उत्तंग ॥
तिम जिन पूजित मिले चित्त दीपक ।
जरत हे समरपतंग रे ॥ भ० ॥

दोहा.

द्रव्य दीपक विभावरी ।
तिमिर करे सब दूर ॥
भाव दीपक जिन भक्तिसें ।
प्रगटे केवल सूर ॥ १ ॥

—•○○•○•○—

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग–भैरवी ॥

दीप जयंकर चिद्घन संगी।
केवल जगत प्रकाशे रे ॥ ए आंकणी॥
द्रव्य दीपक अर्चन करि रंगें।
मिथ्या तिमिर निरासे रे ॥
तस फल केवल दीप सुहंकर।
लोकालोक विकासे रे ॥दीप० ॥ १ ॥
पडत पतंग न धूपकी रेखा।
केवल दीप उजासे रे ॥
जनम मरण गति चार भयंकर।
दुर्मति दुःख सब नासे रे ॥ दीप० ॥२॥
घृत विन पूरे ज्योति अखंडित।
वर्त्तिक मल न चिकासे रे ॥
पाप पतंग जरत सब छिनमें।
ज्योतिमें ज्योति मिलासे रे ॥दी० ॥३॥
जिनमति धनासिरि दीप पूजनसें।
सिद्धगती सुखरासें रे ॥

आतम आनंद घन प्रभु मिलशे ।
पूजत भवि जो उल्लासें रे ॥ दीप०॥४॥

काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० जिनेंद्राय दीपं यजा० ॥ इति ॥ ५ ॥

अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

अक्षय शिव सुख कारणें ।
अक्षत पूजा सार ॥
चौगति चूरण साथियो ।
करे कुमति मत छार ॥ १ ॥

॥ राग—वढंस ॥

तुम तो सुधर भये शिव साधो ।
अक्षत पूजा करो मनमें रे ॥ तुम तो०॥
ए आंकणी ॥

अक्षत तंदुल मणि मुक्ताफल ।
साथीयो कर जिन बिंब पूरो रे ॥
माणक मरकत अंक आदिसें ।
जिन पूजी मन आनंद लो रे ॥ तुम०॥१॥

तंदुल गोधूम अन्न अखंडित ।
आदि लेइ ढिग पूज करो रे ॥
अक्षत पूजा करी मन रंगें ।
अक्षत सुख भंडार भरो रे ॥ तुम० ॥ २ ॥
आतम अनुभव रत्न सुरंगो ।
चिंतामणि सुरद्रुम खरो रे ॥
अक्षत पूजासें भवि प्रगटे ।
जिनवर भक्ति हृदयमें धरो रे ॥ तुम० ॥३॥

॥ दोहा ॥

शुद्धाक्षत तंदुल ग्रही ।
नंदावर्त्त विधान ॥
जिन सन्मुख होय पूजियें ।
जरे करमसंतान ॥ १ ॥

—०००००—

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग मराठीमे ॥

अरिहंत पद अर्चन करी चेतन ।
जिन सरूपमें रम रहीयें ॥
निजसत्ता प्रगटे जारकें ।
करम भरम निज सुख [illegible] ...हंत० ॥
॥ १ ॥

तुं निज अचल ईश विभुचिद्घन ।
रंग रूप विन तुं कहीयें ॥
अज अचल निराशी ।
शिवशंकर अघहर जग महीयं ॥ अरिहं०॥२
अव्यय विभु निरंजन स्वामी ।
त्रिभुवन रामी तुं कहीये ॥
सब तेरी विभूति ।
अक्षत अर्चनसें झट लहिये ॥ अरिहं०॥३॥
मरुदेवी नंदन चरणसुहंकर ।
कीर जुगल अक्षत गहीयें ॥
करि अर्चन सुरनर ।
अंतमें परमात्मपद रस वहीयें ॥ अरि०॥४॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्री परम० जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम नैवेद्य पूजा प्रारंभः ॥

दोहा

शुचि निवेद्यरस सरसशुं ।
भरिअष्टापद थाल ॥

विविध जाति पकवानसैं ।
पूजियें त्रिभुवनपाल ॥ १ ॥

राग—ठुमरी.

जिन अर्चन सुखदाना रे ॥ भविका ॥ जिन०
॥ ए आंकणी ॥

अमृति अमृत पाक पतासां ।
बरफी कंद विदाना रे ॥
फेणी घेबर मोदक पेठा ।
मगदल पेंडा सोहाना रे ॥ जि० ॥१॥
लाखणसाई सक्करपारा ।
मोतीचूर मनमाना रे ॥
खाजां खुरमां खीर खांड घृत ।
सेव कंसार विधाना रे ॥ जि० ॥२॥
साटा दोठां मठडी सखुनी ।
कलाकंद कलिदाना रे ॥
सीरा लापसी पूरी कचोरी ।
शाल दाल घृत आनां रे ॥ जिन० ॥३॥
इत्यादि नैवेद्य सुरंगा ।
पूजियें त्रिभुवन राना रे ॥

आतम आनंद शिव पदरंगी ।
संगी सदा आधाना रे ॥ जि० ॥ ४ ॥

दोहा

अनाहार पद दीजिये ।
हे जिन दीनदयाल ॥
करुं अर्चन नैवेद्यशुं ॥
भर भर सुंदर थाल ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

राग—जंगलो.

महावीर तोरे समवसरणकी रे ॥ महा० ए देशी ॥

जिनंदा तोरे चरणकमलकी रे ।
जो करे अर्चन नर नारी ॥
नैवेद्य भरी शुभ थारी ।
तनमन कर शुद्ध आगारी ॥
जिनंदा तोरे चरण सरणकी रे ॥जि ॥०१॥
वीणा रंग राजे रे । मृदंग ध्वनि गाजे रे।
वाजे वाजितर भारी ॥
मिल अर्चन जन शृंगारी ।
आये जिन मंदिर शुभकारी ॥जिनदा० ॥२॥

भविजन पूजो रे। जगमें देव न दूजो रे।
धूजे जिम करम कठारी ॥
मागुं पद अणाहारी।
ज्युं वेगें वरुं शिवनारी ॥ जिनं० ॥३॥
पूजा फल ताजा रे। हालीजन राजा रे।
आतमकों आनंदकारी ॥
भव भ्रांति मिट गइ सारी।
जिन अर्चनकी बलिहारी ॥ जि०॥४॥

काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० जिनेंद्राय नैवेद्यं यजा० ॥ इति ७ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

अष्ट करमके हरनकों।
आठमि पूजा सार ॥
अडगुण आतम परगटे।
फल पूजन फलकार ॥

राग—ठुमरी

महावीर चरणनमें जाय। मेरो मन लाग रह्यो ॥महा०॥ए देशी॥

मेरो मन रंग रह्यो ।
फल अर्चनमें सुखदाय ॥ मेरो० ॥
ए आंकणी ॥
श्रीफल पूगी पिस्ता बदामा ।
द्राक्ष अखोड मिलाय ॥ मेरो० ॥ १ ॥
खारक मीठे अंब नारंगी ।
कदली सीताफल लाय ॥ मेरो० ॥२॥
द्राख आलूचां फनस संतरा ।
अंगुर जंबीर सुदाय ॥ मेरो० ॥ ३ ॥
तरबूजां खरबूज सिंगोडां ।
सेव अनार गिनाय ॥ मेरो० ॥ ४ ॥
इत्यादि शुभ फल रस चंगे ।
कंचन थाल भराय ॥ मेरो० ॥ ५ ॥
फलसें पूजा अर्हन् केरी ।
आतम शिव फल थाय ॥ मेरो० ॥६॥

दोहा ,

इंद्रादिक जिम फल करी ।
पूजे श्री अरिहंत ॥

भविजन पूजो रे। जगमें देव न दूजो रे।
ध्रूजे जिम करम कठारी ॥
मागुं पद अणाहारी।
ज्युं वेगें वरुं शिवनारी ॥ जिनं० ॥३॥
पूजा फल ताजा रे। हालीजन राजा रे।
आतमकों आनंदकारी ॥
भव भ्रांति मिट गइ सारी।
जिन अर्चनकी बलिहारी ॥ जि०॥४॥

काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० जिनें द्राय नैवेद्यं यजा० ॥ इति ७ ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

दोहा.

अष्ट करमके हरनकों।
आठमि पूजा सार ॥
अडगुण आतम परगटे।
फल पूजन फलकार ॥

राग—ठुमरी

महावीर चरणनमें जाय। मेरो मन लाग रह्यो ॥महा०॥ए देशी॥

मेरो मन रंग रह्यो ।
फल अर्चनमें सुखदाय ॥ मेरो० ॥
ए आंकणी ॥
श्रीफल पूगी पिस्ता बदामा ।
द्राक्ष अखोड मिलाय ॥ मेरो० ॥ १ ॥
खारक मीठे अंब नारंगी ।
कदली सीताफल लाय ॥ मेरो० ॥२॥
द्राख आल्रूचां फनस संतरा ।
अंग्रुर जंबीर सुदाय ॥ मेरो० ॥ ३ ॥
तरबूजां खरबूज सिंगोडां ।
सेव अनार गिनाय ॥ मेरो० ॥ ४ ॥
इत्यादि शुभ फल रस चंगे ।
कंचन थाल भराय ॥ मेरो० ॥ ५ ॥
फलसें पूजा अर्हन् केरी ।
आतम शिव फल थाय ॥ मेरो० ॥६॥

दोहा

इंद्रादिक जिम फल करी ।
पूजे श्री अरिहंत ॥

तिम श्रावक पूजन करे ।
फल वरे सादि अनंत ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ रेखता ॥

जिनवर पूज सुखकंदा ।
नसे अड कर्मका धंदा ॥
सुंदर भरि थाल रतनंदा ।
जिनालये पूज जिनचंदा ॥ जिन०॥१॥
ए आंकणी ॥
विविध फल साररस चंगा ।
अपुनरावृत्ति फल मंगा ॥
अड दिठि संपदा रंगा ।
बुद्धि सिद्धि शिव वधु संगा॥जि० ॥२॥
पूजे भवि भावशुं रंगा ।
करी अडकर्मशुं जंगा ॥
करी शुध रूप अनंगा ।
उतरी अनादिकी भंगा ॥ जिन० ॥३॥
कीरयुग दुर्गता तंगा ।
करी फल पूजना मंगा ॥

आतम शिवराज अभंगा ।
विमलअति नीरजिम गंगा ॥ जिन० ॥४॥

काव्यम् ॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० जिनेंद्राय फलं यजा० ॥ इति ॥ ८ ॥

अथ कलश.

राग—धन्याश्री

पूजन करो रे आनंदी ।
जिनंद पद पूजन करो रे आनंदी ॥ ए आंकणी ॥

अष्टप्रकारी जनहित कारी ।
पूजन सुरतरु कंदी ॥ जि० ॥ १ ॥
श्रावक द्रव्यभाव करे अर्चन ।
मुनिजन भाव सुरंगी ॥ जि० ॥ २ ॥
गणधर सुरगुरु सुरपति सगरे ।
जिनगुण कोन कहंदी ॥ जि० ॥ ३ ॥
में मतिमंदही बाल रमण ज्युं ।
जिनगुण कथन करंदी ॥ जि० ॥ ४ ॥
तपगच्छ मुनिपति विजय सिहवर ।
सत्यविजय गणि नंदी ॥ जि० ॥५॥

कपूर क्षमा जिनोत्तम सद्गुरु ।
पद्मरूप सुखकंदी ॥ जि० ॥ ६ ॥
कीर्त्तिविजय कस्तूर सुहंकर ।
मणीविजय पद वंदी ॥ जि० ॥ ७ ॥
श्रीगुरु बुद्धिविजय महाराजा ।
कुमति कुपंथ निकंदी ॥ जि० ॥ ८ ॥
शिखि जुग अंक इंदु (१९४३)शुभवर्षे ।
पालिताणा सुरंगी ॥ जि० ॥ ९ ॥
विमलाचल मंडन पद भेटी ।
तन मन अधिक उमंगी ॥जि०॥१०॥
आतमराम आनंद रस पीनो ।
जिन पूजत शिवसंगी ॥ जि० ॥ ११ ॥

इति श्रीमदात्माराम (आनंदविजयजी)
महाराज विरचित अष्टप्रकारी
पूजा समाप्त ॥

॥ अथ नवपदादिक पूजाओमां जोइती अवश्य उपयोगी चीजोनां नाम ॥

॥ दुध, दधि, घृत, शर्करा, शुद्धजल, ए पंचामृत, तथा केशर, सुगंधी चंदन, कर्पूर, कस्तूरी, अमर, रोली, मोली, छुटां फूल, फूलोनी माला, फूलोना चंद्रुवा, धूप, तांदुल प्रमुख नव जातिनां धान्य, नव प्रकारनां नैवेद्य, नव प्रकारनां फल, नव प्रकारनी पक्क वस्तु, मिश्री, पतासां, ओला प्रमुख तथा अंगलूहणांने वास्ते सपेत वस्त्र, अने पहेरावबाने वास्ते उत्तम रेशमी वस्त्र, वासक्षेप, गुलाबजल, अत्तर इत्यादिक बीजा पण नव नव नालीना कलश, नव रकेबी, परात, (त्रास) तसला, आरती, मंगलदीपक, भगवाननी आंगी, समवसरण, इत्यादिक सर्व वस्तु प्रथमथी ठीक करीने राखवी ए थकी पूजामां विघ्न न होय ॥ ए संक्षेप विधि कह्यो, विशेष विधि गुरुथकी जाणवो॥

॥ अथ श्रीनवपदपूजाऽध्यापन विधि ॥

॥ तत्र प्रथम कलशढालनविधि ॥ चैत्र तथा आश्विन मासमां ए पूजाओ भणाय, तेवारें नव स्नात्रिया करियें. महोटा कलश प्रमुखमां पंचामृत भरियें. स्थापनामां श्रीफल तथा रोकड नाणुं धरियें. तेने गुरुनी पासेंथी मंत्रावी केशरथी तिलक करे, कंकणदोरो हाथमां वांधे, डाबा हाथमां स्वस्तिक करीने विधिसंयुक्त स्नात्र भणावे. पछी श्रीअरिहंत पदमां तांदूल, धूप, दीप, नैवेद्य प्रमुख अष्ट द्रव्य, वासक्षेप, नागरवेल प्रमुखनां पान, रकेबीमां धरीने ते रकेबी हाथमां राखे. नव कलशने मौलीसूत्र बांधी, कुंकुमना स्वस्तिक करी, पंचामृतथी भरीने ते कलशो हाथमां लेइ, प्रथम श्रीअरिहंत पदनी पूजा भणे, ते संपूर्ण भणी रह्या पछी महोटी परातमां (थालमां) प्रतिमाजीने पधरावे " ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं " ए प्रमाणे कहेतो थको, श्रीअरिहंत पदनी पूजा करे. अष्टद्रव्य अनुक्रमें चढावे॥इति प्रथमपदपूजा विधिः

२ बीजुं सिद्धपद रक्तवर्णे छे, माटे गहुं रके बीमां धरी, श्रीफल तथा अष्ट द्रव्य लेइने नव कलश पंचामृतथी भरीने बीजी पूजा भणे. ते संपूर्ण थयाथी " ॐ ह्रीँ णमो सिद्धस्स " एम कही कलश ढोले. अष्ट द्रव्य चढावे इति द्वितीयपद पूजा विधिः ॥

३ त्रीजुं आचार्यपद पीले वर्णे छे, माटे चणानी दाल, अष्ट द्रव्य, श्रीफल प्रमुख लइ, नव कलश पंचामृतथी भरीने त्रीजी पूजानो पाठ भणे, ते संपूर्ण थयाथी " ॐ ह्रीँ णमो आयरियाणं " एम कही कलश ढोले, अष्ट द्रव्य चढावे. इति तृतीपदपूजा विधिः ॥

४ चोथुं उपाध्यायपद नील वर्णे छे, माटे मग प्रमुख तथा अष्टद्रव्य लइने पूर्वोक्त विधियें पूजा भणी संपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीँ णमो उपाध्यायेभ्य." एम कही कलश ढोले. अष्टद्रव्य चढावे ॥इति विधि:॥

५ पांचमु श्रीसाधुपद श्यामवर्णे छे, माटे अडद प्रमुख लेइ बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करी पूजा भणे ते संपूर्ण थयाथी ॐ ह्रीँ णमो सर्वसाधुभ्यः कहे ॥ इति पंचम पदपूजा विधिः ॥

६ तेमज छठुं दर्शनपद श्वेत वर्णेछे, माटे तांदुल प्रमुख लइ ॐ ह्रूँ णमो दंसणस्स कही, बीजो सर्व पूर्वोक्तविधि करवो. इति षष्ठपदपूजा विधिः॥

७ सातमुं ज्ञानपद श्वेतवर्णे छे, माटे चावल प्रमुख लेइ ॐ ह्रूँ णमोणाणस्स कहेवुं. बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो ॥इति सप्तमपदपूजा विधिः॥

८ आठमुं चारित्रपद पण श्वेतवर्णे छे. माटे चोखा प्रमुख लेइ ॐ ह्रूँ णमो चारित्तस्स कहेवुं बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो ॥ इति अष्टमपद पूजा विधिः ॥

९ नवमुं तपपद श्वेतवर्णे छे, माटे चोखा प्रमुख लेइ पूर्वोक्त विधि करीने ॐ ह्रूँ णमो तवस्स कही, कलश ढोले. अष्ट द्रव्य चढावे. पछी अष्ट प्रकारी पूजा करे॥इति श्रीनवमपदपूजाविधिः ॥
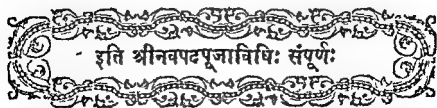
न्यायांभोनिधि तपागच्छाचार्य श्रीमद्विजयानंद
सूरिश्वरजी (आत्मारामजी)
महाराजजी विरचित।

॥ श्रीनवपद पूजा प्रारंभ ॥

॥ अथ प्रथम श्रीअरिहंतपद पूजा ॥

दोहा

श्री संखेश्वर पासजी। पूरो वंछित आस ॥
सिद्ध चक्र पूजा रचूं। जिम तूटे भव पास ॥१॥
उपगारी जिन राजकी। पूजा प्रथम विधान ॥
जो भवि साधे रंगसूं। अजर अमरकी खान॥२॥
उत्पन्न ज्ञान सत रूप है। प्रतिहारज सोभंत ॥
सिंहासन बैठे विभु। दे उपदेश महंत ॥ ३ ॥

राग कमाच

जिन पूजन आनंद खानी २ अंचली ॥ संति अनंत प्रमोद अनंगं, सत चित आनंद दानी. जि० १ तीर्थंकर शुभ नाम कर्म के, उदय कहे जिनवानी. जि० २ घाति कर्मका नाश करीने, अष्टादशम लहानी. जि० ३ करे अघाति जीर्ण वसनसें, तीर्थेश्वर पद ठानी जि० ४ ऐसे अर्हन्

देव सुहंकर, भय भंजन निर्वानी. जि० ५ आत्म आनंद पूरण स्वामी, नमो देव मन मानी. जि०६

दोहा.

शासनपति अरिहा नमो । धर्म धुरंधर धीर ॥
देशना अमृत वर्षणी । निज वीरज वडवीर ॥१॥
निर्मल ज्ञान अखय निधि । शुद्ध रमण निजरूप॥
थिरता चरण सुहंकरू । पूजो अर्हन् भूप ॥ २ ॥

महबूबजानी मेरा यह चाल

श्री अर्हन् स्वामी मेरा । छिन नाहि भूलानारे ॥ तुम पूजो भवि मन रंगे । भव भयहि मिटाना ॥ श्री०१ भव तीजे वर तप करके। सेवी निदानारे॥ जिननाम कर्म शुभ बांधी । हुए त्रिभुवन राना । श्री० ॥ २ ॥ जिनके कल्याणक दिवसे । नरके सुहानारे ॥ उद्योत हूए त्रिभुवनमें। अतिशय गुण गाना॥ श्री० ॥३॥ प्रभु तीन ज्ञान लेइ उपने । जगमें सुभानारे ॥ लेइ दीक्षा भविजन तारे । हूए केवल ज्ञाना॥ श्री० ॥४॥ महा गोप सत्थ निर्यामक । वलि महा महानारे ॥ येह उपमा जिनकों छाजे । ते त्रिभुवन भाना ॥ श्री० ॥५॥ प्रतिहार ज अडजस शोभे । गुण पैंतीस वानारे ॥ प्रभु

चौतिस अतिशय धारी। महानंद भराना ॥ श्री० ॥ ६ ॥ भवि अर्हन पदकों पूजो। निजरूप समा नारे ॥ जिन आत्म ध्याने ध्यावे। तद रूप मिला ना ॥ श्री० ॥ ७ ॥

इति प्रथम श्रीअरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥

॥ काव्यम् ॥ द्रुतविलंबित वृत्तम् ॥

अखिलवस्तु विकाशनभास्करं।
मदनमोहतमस्तु विनाशकम् ॥
नवपदावलि नाम सुभक्तितः।
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

मंत्रम्

ॐ ह्रीँ श्री परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीमतेऽर्हते जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥

दोहा

अलख निरंजन अचर विभु। अक्षय अमर अमार॥
महानंद पदवी वरी। अव्यय अजर उदार ॥ १ ॥
अनंत चतुष्टय रूप ले। धारी अचल अनंग ॥
चिदानंद ईश्वर प्रभु। अटल महोदय चंग ॥ २ ॥

काव्यम्.

अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ।
मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥
नव पदावलि नाम सुभक्तितः ।
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

मंत्रम्

. ॐ ह्रूँ श्रीँ परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते सिद्धाय जलादिकं यजा महे स्वाहा.

॥ अथ तृतीय श्री सूरि पद पूजा. ॥

दोहरा.

तीजे पद सूरि नमो, रवि जिम तेज प्रकाश;
कलह कदाग्रह छोरिने, करी कुमतिका नाश. १

राग परज कालिंगडा

जिनवर वचनं श्रुति अमृत. यह चाल.

सूरिजन अर्चन सुरतरुकंद, सूरिजन॰ अंचली. तत्वबोध जिन आगम धारी, सदा निवारी भवभ य फंद ॥ षट वर्गे वर्गित गुण शोभे, पंचाचार धरे निरधंद ॥सू॰ १ ॥ सूत्रानुसारी दीए देशना,

भवि चकोर शशि करत आनंद ॥ चिदानंद रस स्वाद मगनता, परभावे नखचे मुनिचंद ॥सू० २॥ निष्कामी निर्मल शुद्ध चिदघन, दर्शन ज्ञान चरण शिवकंद ॥ साधे साध्य भविकजन बोहे, गुण संतप निर्मल जिमचंद ॥ सू० ३॥ सहज समाधि संवर धारी, गत उपाधि शक्ति अमंद ॥ ब्राह्य अभ्यंतर तप गुण भारी जारी मोह कर्मको कंद ॥ सू० ४ षटपंचाशत संपत सोहे, खोहे नही सुर रमणी वृंद ॥ जिनशासन आधार सुहंकर, आत्म निर्मल सदाही आनंद ॥ सू० ५ ॥ इति

दोहरा

महा मंत्रके ध्यानसे, आचार्य पद लीन ॥
पंच प्रस्थाने आत्मा, अदभुत निजगुण पीन १॥

कोयल टौक रही मधुवनमे यह चाल

सुरिपद पूजन करो मनतनसें, पाप कलंक नसे इक छिनमें सू० अंचली पांच आचार जे सूधा पालें, भीज गए संजम इक रंगमें;सत्योपदेश करे भविजनकों, आचारज माने मोरे मनमें. सू० १ वर छत्रीश गुणे करी शोभे, युग प्रधान शोभे मुनिजनमें, जग बोहे न रहे खिण कोहे, कर्म

अरिकों हणे इक रनमें. सू० २ सदा अप्रमत्त धर्म उपदेशें, विकथा कषाय नहि निज मनमें; अमल अकलुष अमाय अद्वेषी, रागरहित जिम वर्षत घनमें. सू० ३ सारण वारण नोदन करता, प्रति नोदन देता मुनिजननें; पट्टधारी गच्छ थंभ आचार्य, जे मान्या सत भविजन मनमें. सू० ४ अस्थमिए जिन सूर्य केवल, चंद गए दीपकसम तममें; भुवन पदार्थ प्रगट न पटुजे, आत्माराम आनंद भवनमें. सू० ॥५॥ इति तृतीय श्री सूरि पद पूजा समाप्त. ३

॥ काव्यम् ॥

॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ॥
॥ मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥
नव पदावलि नाम सुभक्तितः ॥
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते सूरये जलादिकं यजामहे स्वाहा.

॥ अथ चतुर्थ श्री उपाध्याय ॥
॥ पद पूजा. ॥

॥ दोहरा ॥

सूत्र अर्थ विस्तारणे, तत्पर श्री उवझ्झाय ॥
नहीं सूरि पण सूरिसम ॥ गणकों अतिहि सहाय ॥१॥

॥ राग कमाच ॥

पाठकपद जिनवँन देन, मन समरस भीनोरे. पाठक० अंचली ॥ मोह ममता माया सब भंग, सूत्र अर्थ दीए द्वादश अंग; मदन विहंडन धर्म रंग, मद सब तज दीनोरे ॥ पाठक० ॥ १ ॥ पंच वर्ग वर्गित गुण चंग, वादि द्विप छेदन वली सिंघ; गणिगच्छ धारण थंभ संग, सूर असूर पूजीनोरे ॥ पाठक० ॥ २ ॥ दशविध जाते धर्म धरी अंग, चरण करण उपदेशक रंग; धार ब्रह्म नव गुप्ती संग, जिनवच रस पानोरे ॥ पा० ॥ ३ ॥ स्याद्वादसें तत्व विचारी, निजगुण ले परगुण सब छारी; करे जिनिंद शासन उतंग, नर भव फल लीनोरे ॥ पा० ॥ ४ ॥ वाचन दान करण अतिसूर, शोडष उपमा योग्य सूनूर, दूर करे सब कर्म चूर, आतम पद लीनोरे ॥ पाठक० ॥ ५ ॥ इति.

॥ दोहरा ॥

निकट होइ पढिये सदा ॥ जिनवर वचन अभंग ॥
सदानंद पाठक पदे ॥ लाग्यो अविहड रंग ॥ १

॥ राग विहाग ॥

जिनंद मत पाठक पूज सुज्ञानी ॥ पाठक॰ अंचली ॥ द्वादश अंग सिज्ञाय करे जे, पारग धारक धामी; सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, पाठक नमु सिरनामी ॥ जि॰ ॥ १ ॥ अर्थ सूत्रके दान विभागे, आचार्य उवझाय; भव तीजें लहे शिवपद संपत, नमिये ते हर्षाय ॥ जि॰ ॥ २ ॥ मूर्ख शिष्य करे शुद्ध ज्ञानी, ध्यानी चिदघन संगी; उपलकों पल्लव सदगुनों करता, मोह मिथ्यात्व विरंगी ॥ जि॰ ॥ ३ ॥ राज कुमर सरिसा गण चिंतक, आचारज पद जोगी; बावना चंदन रससम वचनें, निज आत्म सुखभोगी ॥ जि॰ ॥ ४ ॥ जिन शासनकों प्रकट करे जग, स्वाध्याय तपपर विना; आत्मराम आनंदके ध्याता, कदेइ नही मन दिना ॥ जि॰ ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ श्री उपाध्याय पद पूजा समाप्ता ॥

॥ काव्यम् ॥

अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ॥
मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥
नव पदावलि नाम सुभक्तितः ॥
शुचिमना प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते पाठकाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ पंचम श्री साधु पद पूजा ॥

॥ दोहरा ॥

साधु संजम धारता ॥ दयातणा भंडार ॥
इंद्रिय मदयुत संजमी ॥ नमो नमो हितकार ॥ १

॥ राग झिंद काफी ॥

मुनिजन अर्चन शुद्ध मन करे, करे करे करे करे. मुनि० ॥ अंचली ॥ सूरिजन वाचकनी नित्य सेवा, समिति गुप्ति शुद्ध धरे; कामभोग जल दूर तजीने, उर्द्धकमल जिम तरे ॥ मु० ॥ १ ॥ बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि निवारी, मुक्तिपंथ पग

धररे; अंग अष्ट चित्त सोग समाधि, पाप पंक सब झररे ॥ मु० ॥ २ ॥ सकल विषय विष दूर निवारी, भवदव तापसु हरे; शुद्धस्वरुप रमणता रंगी, निर्मम निर्मद वरे वरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ काउसग मुद्रा घोर ध्यानमें, आशन सहिजसु थिररे; तप तेजे दीपे दया दरियो, त्रिभुवन बंधुसु गिररे ॥ मु० ॥ ४ ॥ ऐसो मुनिपद पूज सुहंकर, आत्म आनंद भररे; शत्रु मित्रसम जन्म मरणको, जगत मोक्ष इक कररे ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ दोहरा ॥

क्षमा मुक्ति रूजु नम्रता, सत्य अकिंचन शर्म
तप संजम लघु रमणता, ब्रह्मचर्य मुनि धर्म ॥ १

आइ इंद्र नार करकर शृंगार, यह चाल

चिदघन आनंद मुनिराज वंद, सबि कटित फंद भवि पूज रंग; मनमें उमंग समता रसभीना. चि० अंचली॥ जिम तरु फूले चैतभृंग, आतम संतोषं अधिक रंग; विना पींडेले मकरंद चंग, होके आनंद गोचर कर लीना. चि० १ कषाय टार पण इंद्री रोध, षटकाय पार मुनि शुद्ध बोध; संजम सतरे मन शुद्ध शोद्ध, मचे रणमें जोध मनमें नही

दीना. चि० २ अठारेसहस्र शिलांगधार, जयणायुत अचल आचार पार; नवविध गुप्तिसें ब्रह्मकार, आतम उजार भववन दवदीना. चि० ३ जे द्वाद शविध तप करत चंग, दिनदिन शुद्ध संयम चडित रंग; सोनानीपरे धरे परिख चंग, चितमें अभंग संजमरस लीना. चि० ४ देशकाल अनुमाननंद, संयम पाले मुनिराजचंद; मिटे हर्षशोक परमाद धंद, आत्म आनंद अनुभवरस पीना. चि० ॥५॥

॥ काव्यम् ॥

॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ।
॥ मदन मोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥
॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः ।
॥ शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

मन्त्रम्.

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते साधवे जलादिकं यजा महे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ षष्ठ श्री सम्यग् दर्शन पद पूजा.

॥ दोहरा ॥

जिनवर भाषित तत्वमे, रुचिलक्षण चितधार;
सम्यग् दर्शन प्रणमिए, भवदुःख भंजनहार ॥१॥

थारी गइरे अनादि निंद. यह चाल, राग माढ.

मिटगइरे अनादी पीर, चिदानंद जागोतो सही. अंचली॰ विपरीत कदाग्रह मिथ्यारूप जे, त्यागोतो सही; जिनवर भाषित तत्वरूचि ढिग, लागोतो सही. मि॰ १ दर्शन विना ज्ञान नही भविने, मानोतो सही; विना ज्ञान चरणन होवे, जाणोतो सही. मि॰२ निश्चय करणरूप जस निर्मल, सक्तितो सही; अनुभव करत रूप सब छंडी, व्यक्तितो सही. मि॰ ३ सत्ता शुद्ध निजधर्म प्रगटकर, छानोतो सही; करणरुची उछले बहु माने, ठानोतो सही. मि॰ ४ साध्य दृष्ट सर्व करणी कारण, धारोतो सही; तत्वज्ञान निज संपत मानी, कारोतो सही. मि॰५ आत्माराम आनंद रस लीनो, प्यारोतो सही; जिनवर भाषित सत्यमानकर, सारोतो सही. मि॰६

॥ दोहरा ॥

देव धर्म गुरु तत्वकी, सद्दहणा परिणाम ।
सातों मलकें मिट गए, सम्यग् दर्शन नाम १

॥ राग परज ॥ निशदिन जोउ वाटडी ॥ यह चाल ॥

सम्यग् दर्शन पूज ले, जिम मिटे मन झोला ॥ अंचली० ॥ मल उपशम खय उपशमे, खयसे दृग खोला, त्रिविध भंगसम दर्शने, जिनवर इम बोला ॥ स० ॥ १ ॥ जिनधर्में दृढ संगसें, अनुभव रस घोला; निज परसत्ता ज्ञानसें, जिम कृमिरग चोला ॥ स० ॥ २ ॥ पांचवार उपशम लहे, क्षय उपशम डोला; संख्यातीत सो जानीए, क्षय इंदु अमोला ॥ स० ॥ ३ ॥ जिसविन ज्ञान अज्ञानहै, वृत्तितरु नवि मोला, सुख निर्वाण न भवि लहे, समकित विन भोला ॥ स० ॥४॥ सडसठ बोले अलंकर्यो, ज्ञान चरण अंदोला, भववन मिथ्या दहनको, दावानल तोला ॥ स० ॥ ५ ॥ सब करणीका मूलहै, शिवपंथ अमोला; दर्शन तेहीज आत्मा' आतम रंग रोला ॥ स० ॥ ६ ॥ इति षष्ठ श्री सम्यग् दर्शन पद पूजा ॥

॥ काव्यम् ॥

अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ।
मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥
नव पदावलि नाम सुभक्तितः ।
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते सम्यग् दर्शनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

अथ सप्तम श्री सम्यग् ज्ञान पद पूजा.

॥ दोहरा ॥

मिथ्या मोह कुपंथही । अज्ञ तिमिर करे दूर ॥
निजपरसत्ता सहु लहे । ज्ञानहि निर्मल सूर ॥१॥

॥ राग भैरवी ॥ लागी लगन कहो ॥ यह चाल ॥

ज्ञान सुहंकर चिदघन संगी, सप्तभंगी मत सारेरे ॥ अंचली० ॥ शुद्ध ज्ञान मिथ्यात्व मिटेसें, ज्ञानावरण विडारेरे; षट्द्रव्य नाना बोध स्वरूपे, निज इच्छा सब वारेरे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ गुरु सेवा सें योग्यता प्रगटे, हेय उपादेय कारेरे; ज्ञेय अनंत

स्वरूपें भासें, दीप तिमिर जिम टोरे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ नित्यानित्य नाश अविनाशी, भेदाभेद अभंगीरे; एक अनेक रूपही अरूपी, स्यादवाद नय संगीरे ॥ ज्ञा० ॥३॥ अर्पिता नर्पित मुख्य गौणता, साधन सिद्ध विरंगीरे; वाच्यावाच्य सअंश निरंशी, आनंद घन दुःख रंगीरे ॥ ज्ञा० ॥४॥ विभाव स्वभावी शुद्ध स्वभावी, वीतराग जड संगीरे, संशय सर्वही दूर निवारे, आत्म समरस चंगीरे ॥ज्ञा०॥५॥

॥ दोहरा ॥

सूत्र संयुत सूचीवत् । कचवर पिंड मझार ॥
विनसे नही तिम श्रुतयुत । पामे भवनो पार ॥१॥

॥ कंकन खोल देव महाराज ॥ यह चाल ॥

सबमें ज्ञानवंत वडवीर, काटे सकल कर्म जंजीर ॥ अंचली ॥ भक्षाभक्ष न जे विन जाने, गम्यागम्य नही पीछाने; कार्याकार्य न जाने कीर ॥ स० ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञानही दया पिछाने, अज्ञानी सरसो नही जाने; ऐसे कहे सिद्धांते वीर ॥ स० ॥ २ ॥ श्रद्धा सकल क्रियाका मूल, तिसका मूलही ज्ञान अमूल; सच्चा ज्ञान धरो मन धीर ॥ स० ॥ ३ ॥ पंच ज्ञानमें श्रुत प्रधान, स्वपर

प्रकाशे तिमिर मिटान; जगमें अति उपगारी हीर ॥ स० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाशन हारा, त्रिभुवन सिद्धराज सुख भारा; सतचिद आत्मराम गंभीर ॥ स० ॥ ५ ॥

काव्यम्.

अखिलवस्तु विकाशन भास्करं ॥
मदन मोह तमस्तु विनाशकम्म ॥
नव पदावली नाम सुभक्तितः ॥
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

मंत्रम्

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते सम्यग् ज्ञानाय जलादि कं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ अष्टम श्री सम्यक् चारित्र ॥ ॥ पद पूजा ॥

॥ दोहरा ॥

सकल जन्म पूरण करे, नही विराधे लेश;
आराधिक चारित्रको, ए जिनवर उपदेश॥ १

राग वसंत ॥ होलीकी चाल ॥

बंदे कछु करले कमाइरे, जांते नर भव सफल कराइ. बंदे कछु करले कमाइरे ॥ अंचली ॥ ज्ञान तणा फल चरण सुरंगा, निराशंसता थाइ; आश्र वरोध भवांबुधि तरीए, यानपात्र सुखदाइ ॥ बंदे० ॥ १ ॥ थारो चरण नही मिले मोले, रंक राज्यप ददाइ बारह अंग पढे जस महिमा क्योंकर वरनी जाइ ॥ बंदे० ॥ २ ॥ तत्व रमण जस मूल सुहं कर, पररमणा मिटजाइ, सकलसिद्धि अनुकूल हूए जब, समदम संयम पाइ ॥ बं० ॥ ३ ॥ सामायिक आदि पंच भेद है, दशविध धर्म सुहाइ; संवर समिति गुप्तिआदि ले, ए जसनामपर जाइ ॥ बं० ॥ ४ ॥ अकषाय अति उज्वल निर्मल, मदन क दन चितलाइ, आत्माराम आनंदके दाता, चारित्र पद मन भाइ ॥ बंदे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहरा ॥

देश सर्व विरती भली, गृहयती अभिराम;
ते चारित्र सदा जयो, कीजे तास प्रणाम १

॥ राग ठुमरी ॥ ब्रह्मज्ञान नही जानारे ॥ यह चाल ॥

चारित्र मुज मन मानारे भविका, चा० ॥ अंचली० ॥ तृणपरे जे सब सुख छंडी, षटखंड केरा

रानारे; चक्रवर्त्ति संयमसिरी वरीया, चारित्र अखे सुख दानारे ॥ चा० ॥ १ ॥ रंक हूआ चारित्र आदरे, इंदनरिंद पूजानारे; असरण सरण चारित्रही वंदु, सतचिद आनंद भरानारे ॥ चा० ॥ २ ॥ बा रामास संयम पर्याये, अनुत्तर सुखही कमानारे; शुक्लशुक्ल अभिजात्य ते ऊपर, सो चारित्र महानारे ॥चा० ॥३॥ चयते अष्ट कर्मका संचय, रिक्त करे सब थानारे, चारित्रनाम निरुक्तिएं भाष्यो, ते वंदु गुण ठानारे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चारित्र सोइ आत्मा मानो, निज स्वभाव रमानारे; मोहवने नही भ्रम ण करतुहै, तब तुं आतम रानारे ॥ चा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥

अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ।
मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म ॥
नव पदावलि नाम सुभक्तितः ।
शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

॥ मंत्रम्म् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम पुरु [illegible] जन्म
मृत्यु निवारणाय श्रीम [illegible]
दिकं [illegible]

अथ नवमी श्री सम्यक् तपपद पूजा.

॥ दोहरा ॥

कर्म द्रुम उन्मूलने । वर कुंजर अतिरंग ॥
तप समूह जयवंतही । नमो नमो मनचंग ॥१॥

॥ राग रामकली ॥ तेरो दरस भले पायो ॥ यह चाल ॥

श्री तप मुज मन भायो, आनंदकर श्री० ॥ अंचली ॥ इच्छारहित कषाय निवारी, दुर्ध्यान स बही मिटायो, बाह्य अभ्यंतर भेद सुहंकर, निर्हेतुक चित्त ठायो ॥ आ० ॥ १ ॥ सर्व कर्मका मूल उ खारी, शिवरमणी चित्त लायो; अनादि संतती कर्म उच्छेदी, महानंदपद पायो ॥ आ० ॥ २ ॥ योगसंयोग आहार निवारी, अक्रियतापद आयो; अंतर बहुरत सर्व संवरी, निज सत्ता प्रगटायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ कर्म निकाचित छिनकमें जारे, क्ष मासहित सुखदायो; तिसभव मुक्तिजाने जिनंदजी, आदर्यो तप निरमायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ आमो सहीआदि सबलब्धि, होवे जासपसायो; अष्टमहा सिद्धि नवनिधि प्रगटे, सो तप जिनमत गायो

॥ आ० ॥ ५ ॥ शिवसुख फलसुर नरवर संपद, पुष्पसमान सुभायो; सो तप सुरतरुसम नित्य वंदु मनवंछित फल दायो ॥ आ० ॥ ६ ॥ सर्व मंगल में पहिलो मंगल, जिनवर तंत्रसु गायो सो तपपद; त्रिहूं कालमें नमीए, आतमराम सहायो ॥ आ०७

॥ दोहरा ॥

इच्छा रोधन संवरी । परणति समता जोग ॥
तपहै सोइज आतमा, वरते निजगुण भोग ॥१॥

॥ राग सोरठ ॥

जिनजीने दीनी माने एक जरी, एक भुजंग पंचविष नागन, सूंघत तुरत मरी ॥जि०॥ अंचली० समता संवर परगुण छारी, समरस रंग भरी अचल; समाधि तपपद रमतां, ममता मूरजरी ॥ जि०॥१॥ योग असंखही जिनवर भाषित, नवपद मूख्य करी; कर अवलंबन भवि मन शुद्धे, कर्म जंजीर जरी ॥ जि० ॥ २ ॥ आगमनो आगम करी भेदे, आतम रमण करी; सप्तनय सतभंगी अनघवर, घटमेंही रिद्धि धरी ॥ जि० ॥ ३ ॥ ए नव पद शुद्ध अर्चनकरके, निज घटमांहे धरी; चिदानंदघन सहज विलाशी, भवन दाह करी ॥ जि० ॥४॥

सिरीपाल सिधचक्र आराधी, मनतन राग हरी;
नव भवांतर शिव कमला ले, आतमानंद भरी ॥
जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ कलश ॥

॥ भविनंदो जिनंद जस वरणीने ॥ यह चाल ॥

भवि वंदो जिनंदमत करणीने ॥ भ० ॥ अं-
चली० ॥ इम नवपद मंडल गुण वरणी च्यार
न्यास दुःख हरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥ सम्यक् सात
नयें सब जाणी, आदरी कुमति विहरणीने ॥ भ०
॥ २ ॥ श्री तपगच्छ नभोमणि वरमुनिपति, वि
जयसिंहसूरि चरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥ सत्य कपूर
क्षमा जिन उत्तम, पद्मरूप अघ टरणिने ॥ भ० ॥
॥ ४ ॥ कीर्ति विजय कस्तुर सुगंधी, मणि तिमिर
जग हरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री गुरुबुद्धि विजय
महाराजा, विजयानंद जिन सरणीने ॥ भ० ॥६॥
जीरागाम तिहां संघ जयंकर, सुख संपत उदय
करणीने ॥ भ० ॥ ७ ॥ तिनके कथनसें रचना
कीनी, सुगम रीत अघ हरणीने ॥ भ० ॥ ८ ॥
पसुयुग अंक इंदु शुभुवर्षे, पट्टी नगर सुख धर

णीने ॥ भ० ॥ ९॥ रही चौमासा येह गुण गाया, आतम शिववधू परणीने ॥ भ० ॥१०॥ इति कलश.

॥ काव्यम् ॥

॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं ॥
॥ मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥
॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः ॥
॥ शुचिमना प्रयजामि विशुद्धये ॥

॥ मंत्रम्म् ॥

ॐ ह्रूँ श्रीँ परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते सम्यक् तपसे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवपद पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ सत्तरभेदीपूजाऽध्यापनविधिः ॥

प्रथम स्नात्र करे, पछी अष्टप्रकारी पूजा करे ॥ उज्ज्वल रूपा प्रमुखनी रकेबीमां कुंकुम तथा केशर विगेरेनो स्वस्तिक करे. पछी सुंदर कलश, केशर प्रमुख मिश्रित शुद्ध जले भरी, स्थापनानो रूपैयो कलशमां नांखे. कलश रकेबीमां राखी, पछी स्नात्रीया मुखकोश उत्तरासंगथी करी त्रण नवकार गणी नमस्कार करे. हाथे धूप देइ रकेबी हाथमां धारण करे, मन स्थिर राखे, छींक वर्जन करे, स्नात्रीया प्रभुजी सन्मुख उभा रहे पंचामृत नो कलश अडग राखे, मुखथकी पहेली पूजानो पाठ भणे, ते भणीने पछी प्रभुनें पंचामृतनुं न्हवण करे तथा प्रभुनी डाबी बाजुने अंगुठे जलधारा आपे

२ पछी सुंदर सूक्ष्म अंगलूहणे जिनबिंब प्रमार्जी केशर, चंदन, मृगमद, अगर, कर्पूरादिकथी कचोली भरी हाथमां लइ उभो रहीने मुखथकी बीजी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने विलेपन करी नव अंगे पूजन करे.

३ पछी अत्यंत सुकोमल सुगंधित अमुलक वस्त्र युग्म उपर केशरनो स्वस्तिक करी, प्रभुजी आगल उभो रही, मुखथकी त्रीजी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने प्रभुजी आगल वस्त्र युग्म चढावे.

४ पछी अगरचंदन, कर्पूर, कुंकुम, कस्तूरीनुं चूर्ण करी, कचोली भरी प्रभु आगल उभो रही, मुखथकी चोथी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने वासचूर्ण बिंब उपर छांटे, जिनमंदिरमां चूर्ण उछाले.

५ पछी गुलाब, केतकी, चंपो, कुंद, मचकुंद, सोवन जाति, जूई, विउलसिरि, इत्यादि सुगंधयुक्त पंचवर्ण फूल लेइ, उभो रही, मुख थकी पांचमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने पंचवर्ण फूल चढावे.

६ पछी नाग, पुन्नाग, मरुओ, दमणो, गुलाब, पाडल, मोघरो, सेवंत्री, चंपेली, मालती, प्रमुख पंचवर्णनां कुसुमनी सुंदर माला गुंथीनें हाथमां लेइ उभो रही छठी पूजानो पाठ भणे, ते भणीने प्रभुने कंठें फूलनी माला पहेरावे.

७ पछी पंचवर्ण फूलनी केशरथी आंगी रची, हाथमां लेइ मुख थकी सातमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीनें, सुगंधित पुष्पें करी, अत्यंत भक्तियें सहित भगवंतना शरीरें आंगी रचे.

८ पछी घनसार, अगर, सेलारस प्रमुख सुगंधवटी इत्यादिक सुगंधचूर्ण रकेबीमां नाखी, हाथमां लेइ परमेश्वर आगल उभो रही मुखथकी आठमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने प्रभुजीने सुगंधीचूर्ण चढावे.

९ पछी सधवा स्त्रियो एकठी थइने पंचवर्णी ध्वजा, धूपसहित सुवर्णमय दंडें करी संयुक्त, उज्ज्वल थालमां कुंकुमनो स्वस्तिक करी अक्षत, श्रीफल, रूपानाणुं धरीने ते थालमां ध्वजा धारण करे पछी सधवा स्त्रीना मस्तकें राखी, गीत गान गातां सर्व जातिनां वाजित्र वाजतां त्रण्य प्रदक्षिणा आपे. पछी ध्वजा उपर गुरुपासें वासक्षेप करावे. प्रभु सन्मुख गहूंली करे. उपर अक्षतथी स्वस्तिक करे. सोपारी चढावी मुखथकी नवमी पूजानो पाठ भणे ते भणीने ध्वजा चढावे.

१० पछी पीरोजा, नीलम, लसणीया, मोती

माणकथी जडेलो एवा मुकुट, कुंडल, हार, ति
क बहेरखा, कंदोरा, कडां इत्यादिक आभरण
मुखथकी दशमी पूजानो पाठ भणे. ते भणी
आभरण तथा रोकड नाणुं डबल चढावे.

११ पछी कोल, अंकोल, कुंद, मचकुंद, ए
सुगंधित पुष्पोनुं गृह बनावी छाजली, गोख, क
रणी प्रमुखनी रचना करी, हाथमां लेइ मुखथक
अगीयारमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने फूल
र चढावे फूलनी चंदनमाला, फूलना चंद्रुवा पोठ
या प्रमुख बांधे.

१२ पछी पंचवर्णा सुगंधित पुष्प लेइ, फूलने
मेघ वरसावतो बारमो पूजानो पाठ भणे. ते भ
णीने पुष्प उछाले.

१३ पछी अखंड तंदुलने रंगी, पंचवर्णा करी
एक थालमां दर्प्पण, भद्रासन, नंदावर्त्त शरावसं
पुट, पूर्णकुंभ, मत्स्ययुग्म, श्रीवत्स, वर्द्धमान अ
ने स्वस्तिक, ए अष्ट मांगलिक रची ते थाल हा
थमां लेइ प्रभुजीनी आगल उभो रही तेरमी पू
जानो पाठ भणे. ते भणीने रूपानाणें संयुक्त ते
थाल प्रभुजी आगल धरे.

१४ पछी कृष्नागरु, कुंदरुक, सेलारस, सुगंध घटी, घनसार, चंदन, कस्तूरी, अमर इत्यादिक वस्तुनुं धूपधाणुं रकेबीमां धरी मुखथकी चौदमी पुजानो पाठ भणे, ते भणीने धूपधाणुं उखेवे.

१५ पछी सुंदर स्वरूपवान एवां कुमार कुमारिकाओ मधुरस्वरे प्रभुजीनी आगल उभां थकां गीतगान करे. अने मुखथकी पंदरमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने पंदरमी पूजा करे.

१६ पछी पंचेंद्रियें परिपूर्ण एवा सुंदर कुमार अने कुमारिकाओ अथवा समान अवस्थावाली सधवा स्त्रियो अथवा एकली कुमारिकाओ सुंदर वस्त्र आभूषण पहेरी, प्रभुनी सन्मुख उभी रही, शंका कांक्षा रहित नाटक करे कदापि स्त्रियोनो योग न बने तो समान अवस्थावाला पुरुष मली, नाटक करता थका मुखथकी सोलमी पूजानो पाठ भणे ते भणीने सोलमी पूजा करे.

१७ पछी मद्दल, कंसाल, तबल, ताल, झांज, वीणा, सतार, तूरी, भेरी, फेरी, दुदुंभि, शरणाइ, चंग, नफेरी प्रमुख सर्व जातिनां वाजित्र वजावता थका मुखथकी सत्तरमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने सत्तरमी पूजा करे.

पछी आरति करे तेनो विधि कहे छे. पूजा भणी रह्या पछी सर्व वस्त्रप्रमुख पहेरी, उत्तरासंग करे. पछी प्रभुथी अंतरपट करी पोताने ललाटें कुंकुमनुं तिलक करे. पछी अंतरपट दूर करी, एके बीमां स्वस्तिक करी मांहे रूपानाणुं, तांदुल, सोपारी धरे. पछी आरति दीपक सार्थे संयोजीने प्रभुनी सन्मुख दक्षिणावर्त्तथी सर्व वाजित्र वाजतां आरति करे. पछी मंगळदीपक उतारे.

॥ इतिं सत्तरभेदी पूजा विधि संपूर्णा ॥

अथ

न्यायांभोनिधि माहाराज श्रीआत्मारामजी
आनंदविजयजी कृत

॥ सत्तरभेदी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहरा ॥

सकल जिणंद मुणिंदनी, पूजा सत्तर प्रकार॥
श्रावक शुध भावें करे, पामे भवनो पार ॥ १ ॥
ज्ञाता अंगें द्रौपदी, पूजे श्री जिनराज ॥ रायपसे
णि उपांगमें, हित सुख शिवफल ताज ॥ २ ॥
न्हवण विलेपन वस्त्रयुग, वास फूल वरमाल ॥
वरण चुन्न ध्वज शोभती, रत्नाभरण रसाल ॥३॥
सुमनसगृह अति शोभतुं, पुष्पघरा मंगलीक ॥
धूप गीत नृत्य नादशुं, करत मिटे सब भीक ॥४॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहरा ॥

शुचितनु वदन वसन धरी, भरे सुगंध विशाल ॥
कनक कलश गंधोदकें, आणि भाव विशाल ॥१॥

नमत प्रथम जिनराजकुं, मुख बांधी मुखकोश ॥
भक्ति युक्तिसें पूजतां, रहे न रंचक दोष ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग खमाच ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ मान तुं काहे पें करता ॥
॥ ए देशी ॥

मान मद मनसें परहरता, करी न्हवण जगदीश ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ समकितनी करनी दुःख हरनी, जिन पखाल मनमें धरता ॥ अंग उपंग जिनेश्वर भाखी, पाप पडल जरता ॥ क० ॥ १ ॥ कंचनकलश भरी अति सुंदर, प्रभु स्नान भविजन करता ॥ नरक वैतरणी कुमति नासे, महानंद वरता ॥ क० ॥ २ ॥ काम क्रोधकी तपत मिटावे, मुक्तिपंथ सुख पग धरता ॥ धर्म कल्पतरु कंद सीचता, अमृत घन झरता ॥ क० ॥ ३ ॥ जन्म मरणका पंक पखारी, पुण्य दशा उदय करता ॥ मंजरी संपद तरु वर्द्धनकी, अक्षय निधि भरता ॥ क० ॥ ४ ॥ मनकी तप्त मिटी सब मेरी, पदकज ध्यान हृदे धरता ॥ आतम अनुभव रसमें भीनो, भव समुद्र तरता ॥ क० ॥५॥ (यह पूजा पढके पंचामृत तथा तीर्थ जलसें भगवानकूं स्नान करावे) ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयविलेपन पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहरा ॥

गात्र लुही मन रंगशुं, महके अतिही सुवास ॥
गंधकषायी वसनशुं, सकल फले मन आश ॥१॥
चंदन मृगमद कुंकुमें, भेली मांहे बरास ॥
रतनजडित कचोलीयें, करी कुमतिनो नाश ॥२॥
पग जानु कर खंधमें, मस्तक जिनवर अंग ॥
भाल कंठ उर उदरमें, करे तिलक अति चंग ॥३॥
पूजक जन निज अंगमें, रचे तिलक शुभचार ॥
भाल कंठ उर उदरमें, तप्त मिटावनहार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ठुमरी ॥ ताल—पजाबी ठेको ॥ मधुबनमें मेरे सांवरीया ॥
॥ ए देशी ॥

करी विलेपन जिनवर अंगें, जन्म सफल भविजन माने ॥ क० ॥ १ ॥ मृगमद चंदन कुंकुम घोली, नव अंग तिलक करी थाने ॥ क० ॥ २ ॥ चक्री नवनिधि संपद प्रगटे, करम भरम सब क्षय जाने ॥ क० ॥ ३ ॥ मन तनु शीतल सब अघ टारी, जिनभक्ती मन तनु ठाने ॥ क०

॥ ४ ॥ चौसठ सुरपति सुर गिरिरंगें, करी विले पन धन माने ॥ क० ॥ ५ ॥ जागी भाग्यदशा अब मेरी, जिनवर बचन हृदे ठाने ॥ क० ॥ ६ ॥ परम शिशिरता प्रभु तन करतां, चितसुख अधि के प्रगटाने ॥ क० ॥ ७ ॥ आत्मानंदी जिनवर पूजी, शुद्ध स्वरूप निज घट आने ॥ क० ॥८॥ (यह पढकें विलेपन कीजें,प्रभुकुं नव अंगें टीकी दीजें) ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा प्रारंभः ॥

(अत्यंत कोमल चंदन चर्चित उज्ज्वल वस्त्रयुग ल, रकेबीमें लेकर, एक श्रावक खडा रहे, ओर मुखसें इस मुजब पढे सोलिखते हैं ॥)

॥ दोहरा ॥

वसन युगल अति उज्ज्वलें, निर्मल अतिही अभंग ॥ नेत्रयुगल सूरी कहे, येही मतांतर संग ॥ १ ॥ कोमल चंदन चरचियें, कनक खचित व रचंग ॥ हय पल्लव शुचि प्रभु शिरें, पहेरावे मन रंग ॥ २ ॥ द्रौपदी शक्र सुरियाभ ते, पूजे जिम जिनचंद ॥ श्रावक तिम पूजन करे, प्रगटे परमा

नंद ॥ ३ ॥ पाय लुहण अंग लूहणां, दीजें पूजन काज ॥ सकल करम मल क्षय करी, पामे अविचल राज ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग देश सोरठ ॥ पंजाबी ठेको ॥ कुबजाने जादू डारा ॥
॥ ए देशी ॥

जिनदर्शन मोहनगारा, जिने पाप कलंक पखारा ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ पूजा वस्त्रयुगल शुचि संगें, भावना मनमें विचारा ॥ निश्चय व्यवहारी तुम धर्में, वरतुं आनंदकारा ॥ जि० ॥१॥ ज्ञान क्रिया शुद्ध अनुभव रंगें, करुं विवेचन सारा ॥ स्वपर सत्ता धरुं हरुं सब, कर्म कलंक पहारा ॥ जि० ॥ २ ॥ केवल युगल वसन अर्चितसें, मांगत हुं निरधारा ॥ कल्पतरु तुं वंछित पूरे, चूरे करम कठारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ भवोदधि तारण पोत मिला तुं, चिद्घन मंगलकारा ॥ श्रीजिनचंद जिनेश्वर मेरे, चरण सरण तुम धारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ अजर अमर कर अलख निरंजन, भंजन करम पहारा ॥ आत्मानंदी पापनिकंदी, जीवन प्राण आधारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ गंधपूजा प्रारंभः ॥

(अगर, चंदन, कपूर, कुंकुम, कुसुम, कस्तूरीका चूर्ण करकें कचोली भर कें खडा रहे, और मुखसें इस मुजब पढे सोलिखतें हैं.)

॥ दोहरा ॥

चोथी पूजा वासकी, वासित चेतन रूप ॥
कुमति कुगंध मिटी गइ, प्रगटे आतमरूप ॥ १ ॥
सुमती अति हर्षित भइ, लागी अनुभव वास ॥
वास सुगंध पूजतां, मोह सुभटको नाश ॥ २ ॥
कुंकुम चंदन मृगमदा, कुसुम चूर्ण घनसार ॥
जिनवर अंगें पूजतां, लहियें लाभ अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ अब मोहे डांगरीयां ॥
॥ ए देशी ॥

चिदानंद घन अंतरजामी ॥ अब मोहे पार उतार ॥ जिनंदजी ॥ अब० ॥ ए आंकणी ॥ वासखेपसें पूजन करतां, जनम मरण दुःख टार ॥ जि० ॥ निजगुन गंध सुगंधी महके, दहे कुमति

मद मार ॥ जि० ॥ १ ॥ जिन पूजतही अति म
न रंगें, भगे भरम अपार ॥ जि० ॥ पुद्गलसंगी
दुर्गंध नाठो, वरते जयजयकार ॥ जि० ॥ २ ॥
कुंकुम चंदन मृगमद मेली, कुसुम गंध घनसार ॥
जि० ॥ जिनवर पूजन रंगें राचे, कुमति संग
सब छार ॥ जि० ॥ ३ ॥ विजय देवता जिनवर
पूजे, जीवाभिगम मझार ॥ जि० ॥ श्रावक तिम
जिनवासे पूजे, गृह स्वधर्मनो सार ॥ जि० ॥४॥
समकितनी करणी शुभ वरणी, जिन गणधर
हितकार ॥ जि० ॥ आतम अनुभव रंगरंगीला,
वास यजनका सार ॥ जि० ॥ ५ ॥ यह पढकें
प्रभु आगें वासक्षेप उछाले ॥ इति चतुर्थ पूजा ॥

॥ अथ पंचम पुष्पारोहणपूजा प्रारंभः ॥

(॥ चंद, मचकुंद, दमनक, मरुवा, कुंद, सोवन,
जाइ, जुइ, चंबेली, गुलाब, बोलसिरी, इत्यादि सु-
गंधी फुल पंच वर्णके रकेबीमें रख कें, इससुजब पढे)

॥ दोहरा ॥

॥ मन विकसे जिन देखतां, विकसित फूल
अपार ॥ जिनपूजा ए पंचमि, पंचमि गति दा-
तार ॥ १ ॥ पंच वरणके फूलसें, पूजे त्रिभुवन

नाथ ॥ पंच विघन भवि क्षय करी, साधे शिव-
पुरसाथ ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग कहेरवा ॥ ताल ठुमरी ॥ पास जिनंदा प्रभु, मेरे ॥
॥ मन वसीया ॥ ए देशी ॥

॥ अर्हन् जिनंदा प्रभु, मेरे मन वसीया ॥ ए आंकणी ॥ मोगर लालगुलाब मालती, चंपक केतकी निरख हरसीया ॥ अ० ॥ १ ॥ कुंद प्रियंगु वेलि मचकुंदा, बोलसिरी जाइ अधिक दरसीया ॥ अ० ॥ २ ॥ जल थल कुसुम सुगंधी महके, जिनवर पूजन जिम हरि रसीया अ० ॥३॥ पंच बाण पीडे नहि मुझकों, जब प्रभु चरणें फूल फरसीया ॥ अ० ॥ ४ ॥ जडता दूर गई सब मेरी, पांच आवरण उखार धरसीया ॥ अ० ॥ ५॥ अवर देवकूं आक धत्तूरा, तुमरे पंच रंग फूल वर सीया ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन चरणें सहु तपत मिटतु हे, आतम अनुभव मेघ वरसीया ॥ अ०॥ ॥ ७ ॥ (यह पढकें पंच वरणके फूल चढावे ॥ इति ॥ पंचम पुष्पारोहण पूजा समाप्त ॥

॥ अथ षष्ठ पुष्पमालापूजा प्रारंभः ॥

(॥ नाग, पुन्नाग, मरुआ, दमणा, गुलाब, पाडल मोघरा, सेवंत्री, मोतिया, केतकी, चंपा, चंबेली, मालती, केवडा, जाइ, जुइ प्रमुख फुलोंकी पंच वरणी सुगंधवाली माला गुंथी हाथमें लेके खडा रहे, और मुखसें इस मुजब पढे ॥)

॥ दोहरा ॥

॥ छठी पूजा जिन तणी, गुंथी कुसुमनी माल ॥ जिन कंठें थापी करी, टालियें दुःख जंजाल ॥ १ ॥ पंच वरण कुसुमें करी, गुंथी जिन गुण माल ॥ वरमाला ए मुक्तिकी, वरे भक्त सुविशाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो ॥ ताल दीपचंदी ॥ पार्श्वनाथ जपत है
॥ जो जन करम न आवे ताके नेरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुम मालसें जो जिन पूजे, कर्मकलंक नासे भवि तेरे ॥ कु० ॥ ए आंकणी ॥ नाग पुन्नाग प्रियंगु केतकी, चंपक दम नक कुसुम

नाथ ॥ पंच विघन भवि क्षय करी, साधे शिव-
पुरसाथ ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग कहेरवा ॥ ताल ठुमरी ॥ पास जिनंदा प्रभु, मेरे ॥
॥ मन वसीया ॥ ए देशी ॥

॥ अर्हन् जिनंदा प्रभु, मेरे मन वसीया ॥ ए
आंकणी ॥ मोगर लालगुलाब मालती, चंपक
केतकी निरख हरसीया ॥ अ० ॥ १ ॥ कुंद
प्रियंगु वेलि मचकुंदा, बोलसिरी जाइ अधिक
दरसीया ॥ अ० ॥ २ ॥ जल थल कुसुम सुगंधी
महके, जिनवर पूजन जिस हरि रसीया अ० ॥३॥
पंच बाण पीडे नहि मुझकों, जब प्रभु चरणें फूल
फरसीया ॥ अ० ॥ ४ ॥ जडता दूर गई सब मेरी,
पांच आवरण उखार धरसीया ॥ अ० ॥ ५॥
अवर देवकूं आक धत्तूरा, तुमरे पंच रंग फूल वर
सीया ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन चरणें सहु तपत
मिटतु हे, आतम अनुभव मेघ वरसीया ॥ अ०॥
॥ ७ ॥ (यह पढकें पंच वरणके फूल चढावे ॥
इति ॥ पंचम पुष्पारोहण पूजा समाप्त ॥

॥ अथ षष्ठ पुष्पमालापूजा प्रारंभः ॥

(॥ नाग, पुन्नाग, मरुआ, दमणा, गुलाब, पाडल मोघरा, सेवंत्री, मोतिया, केतकी, चंपा, चंबेली, मालती, केवडा, जाइ, जुइ प्रमुख फुलोंकी पंच वरणी सुगंधवाली माला गुंथी हाथमें लेके खडा रहे, और मुखसें इस मुजब पढे ॥)

॥ दोहरा ॥

॥ छठी पूजा जिन तणी, गुंथी कुसुमनी माल ॥ जिन कंठें थापी करी, टालियें दुःख जंजाल ॥ १ ॥ पंच वरण कुसुमें करी, गुंथी जिन गुण माल ॥ वरमाला ए मुक्तिकी, वरे भक्त सुविशाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो ॥ ताल दीपचदी ॥ पार्श्वनाथ जपत है
॥ जो जन करम न आवे ताके नेरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुम मालसें जो जिन पूजे, कर्मकलंक नासे भवि तेरे ॥ कु० ॥ ए आंकणी ॥ नाग पुन्नाग प्रियंगु केतकी, चंपक दम नक कुसुम

घने रे ॥ मल्लिका नव मल्लिका शुद्ध जाति, तिलक वसंतिक सब रंग हे रे ॥ कु० ॥ १ ॥ कल्प अशोक वकुल मगदंती, पाडल मरुक मालती ले रे ॥ गुंथी पंच वरणकी माला, पाप पंक सब दूर करे रे ॥ कु० ॥ २ ॥ भाव विचारी निजगुण माला, प्रभुसें मागे अरज करे रे ॥ सर्व मंगलकी माला रोपे, विघन सकल सब साथ जले रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ आतमानंदी जगगुरु पूजी, कुमति फंद सब दूर भगे रे ॥ पूरण पुण्यें जिन वर पूजे, आनंदरूप अनूप जगे रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ (यह पढी प्रभु कंठें फुल माला चढावे)॥इति॥६॥

॥ अथ सप्तम अंगीरचनापूजा प्रारंभ ॥

(॥ पांच वरणके फुलोंकी केसरके साथ अंगी रचे, सो हाथमें ले कें खडा रहे, मुखसें इससुजब पढे.)

॥ दोहा ॥

॥ पांच वरणके फूलकी, पूजा सातमी मान ॥ प्रभु अंगें अंगी रची, लहियें केवलज्ञान ॥ १ ॥ मुक्तिवधूकी पत्रिका, वरणी श्री जिनदेव ॥ शुद्ध तत्त्वि समजे सही, मूढ न जाणे भेव ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ तुम दीनके नाथ दयाल लाल ॥
॥ ए देशी ॥

तुम चिद्‌घनचंद आनंद लाल, तोरे दर्शनकी बलिहारी ॥ तु० ॥ १ ॥ पंचवरण फ़ुलोसें अंगीयां, विकसे ज्युं केसर क्यारी ॥ तु० ॥ २ ॥ कुंद गुलाब मरुक अरविंदो, चंपकजाति मंदारी ॥ तु० ३ ॥ सोवन जाती दमनक सोहे, मनतनु तजित विकारी॥ तु० ॥ ४ ॥ अलखनिरंजन ज्योति प्रकासे, पुद्‌गल संग निवारी ॥ तु० ॥ ५ ॥ सम्यग् दर्शन ज्ञानस्वरूपी, पूर्णानंद विहारी ॥ तु० ॥ ६ ॥ आतम सत्ता जबहीं प्रगटे, तबहीं लहे भवपारी ॥ तु० ॥ ७ ॥ (यह पढकें सुगंध पुष्पे करी भगवानके शरीरे अंगी रचे) ॥ इति सप्तम पूजा ॥

॥ अथाष्टमचूर्ण पूजा प्रारंभः ॥

(॥ घनसार, अगर, सेलारस, मृगमद, सुगंध वटी करी हाथमें ले कें जिनेश्वरके आगें खडा रहे, और मुखसें इस मुजब पढे, सोलिखते हें ॥)

॥ दोहा ॥

जिनपति पूजा आठमी, अगर भला घन सार ॥
सेलारस मृगमद करी, चूरण करी अपार ॥ १ ॥
चुन्नारोहण पूजना, सुमती मन आनंद ॥
कुमती जन खीजे अति, भाग्यहीन मतिमंद ॥२॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जोगीयो ॥ नाथ मेंनु छडके गढ गिरनार तुं गयो री ॥
॥ ए देशी ॥

करम कलंक दह्यो री, नाथ जिनज जके ॥ ए आंकणी ॥ अगर सेलारस मृगमद चूरी, अतिघनसार मह्यो री ॥ ना० ॥ १ ॥ तीर्थ कर पद शांति जिनेश्वर, जिन पूजीने ग्रह्यो री ॥ना० ॥ २ ॥ अष्टकरम दल उदभट चूरी, तत्त्वरम णकूं लह्यो री ॥ ना० ॥ ३ ॥ आठोही प्रवचन पालन शूरा, दृष्टि आठ रह्यो री ॥ ना० ॥ ४ ॥ श्रद्धा भासन रमणता प्रगटे, श्रीजिनराज कह्यो री ॥ ना० ॥ ५ ॥ आतम सहजानंद हमारा, आठमी पूजा चह्यो री ॥ ना० ॥ ६ ॥ (यह पाठ पढकें प्रभुजीकों चूरण चढावे) ॥इति अष्टम चूर्ण पूजा ॥

—०००००—

॥ अथ नवम ध्वजपूजा प्रारंभः ॥

(॥ पंच वर्णी ध्वजा, घूघरीयो सहित हेममय दंड करी संयुक्त सधवा स्त्री मस्तकें लेइ थालमें धरि तीन प्रदक्षिणा देइ वासक्षेप करि ध्वजा लेइ खडी रहे ॥)

॥ दोहा ॥

पंचवरण ध्वज शोभती, घूघरिनो घमकार ॥
हेम दंड मन मोहनी, लघू पताका सार ॥ १ ॥
रणझण करती नाचती, शोभित जिनहर शृंग ॥
लहके पवन झकोरसें, बाजत नाद अभंग ॥ २ ॥
इंद्राणी मस्तक लई, करे प्रदक्षिण सार ॥ सधवा तिम विधि साचवे, पाप निवारणहार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ठुमरी झींझोटीनी ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ आइ इंद्रनार ॥
॥ ए देशी ॥

आइ सुंदर नार, कर कर सिंगार, ठाढी चैत्यद्वार, मन मोदधार, प्रभु गुण विथार, अघ सब क्षय कीनो ॥ आ० ॥ १ ॥ जोजन उतंग, अति सहस चंग, गइ गगन लंघ,

भवि हरख सघ, सब जग उतंग, पदछिन कर्मं लीनो ॥ आ० ॥ २ ॥ जिम ध्वज उतंग, तिम पद अभंग, जिन भक्ति रंग, भवि मुक्ति मंग, चिदघन आनंद, समतारस भीनो ॥ आ०॥ ॥ ३ ॥ अब तार नाथ, मुझ कर सनाथ, तज्यो कुगुरु साथ, मुझ पकड हाथ, दीनाके नाथ, जिनवच रस पीनो ॥ आ० ॥ ४ ॥ आतम आनंद, तुम चरण वंद, सब कटत फंद, भयो शिशिर चंद, जिन पठित छंद, ध्वजपूजन कीनो ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ (ए पदकें ध्वज चढावे) ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी आभरण पूजा प्रारंभः ॥

(॥ पीरोजा, नीलम, लसणीया, हीरा, माणेक, पन्ना प्रमुखसें जडे रत्नाभरण लेइ मुखसें इस मुजब पढे ॥)

॥ दोहा ॥

॥ शोभित जिनवर मस्तकें, रयण मुकुट झलकंत ॥ भाल तिलक अंगद भुजा, कुंडल अति चमकंत ॥ १ ॥ सुरपति जिन अंगें रचे, रत्नाभरण विशाल ॥ तिम श्रावक पूजा करे, कटे करम जंजाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो, ताल दादरो ॥ अंग्रेजी वाजेकी चाल ॥

॥ आनंद कंद पूजतां, जिनंद चंद हुं ॥ ए आंकणी ॥ मोति ज्योति लाल हीर, हंस अंक ज्युं ॥ कुंडल्ल सुधारकरण, मुकुट धार तुं ॥ आ० ॥ १ ॥ सूर चंद कुंडलें, शोभित कान हु ॥ अंग द कंठ कंठलो, मुणिंद तार तुं ॥ आ० ॥ २ ॥ भाल तिलक चंगरंग, खंगचंग ज्युं ॥ चमक दम के नंदनी, कंदब जीत तुं ॥ आ० ॥ ३ ॥ व्यवहार भाष्य भाखीयो, जिनंद बिंब युं ॥ करे सिंगार फार कर्म, जार जार तुं ॥ आ० ॥ ४ ॥ वृद्धि भाव आतमा, उमंग कार तुं ॥ निमित्त शुद्ध भावका, पियार कार तुं ॥ आ० ॥ ५ ॥ (ए पूजा पढके भूषण चढावे ॥ इति ॥ १० ॥)

॥ अथैकादश पुष्पगृहपूजा प्रारंभः ॥

(सुगंधि फूलोंका घर वनाके हाथमें लेके मुखसें इस मुजब पढे, सो लिखते है)-

॥ दोहा ॥

पुष्पघरो मन रंजनो, फूले अद्भुत फूल ॥

महके परिमल वासना, रहकें मंगलमूल ॥ १ ॥
शोभित जिनवर बीचमें, जिम तारामें चंद ॥ भवि
चकोर मन मोदसें, निरखी लहे आनंद ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग खमाच–ताल पंजाबी ठेको ॥ शांति वदन कज देख ॥
॥ नयन ॥ ए देशी ॥

॥ चंदवदन जिन देख नयन मन, अमीरस भीनो रे ॥ ए आंकणी ॥ राय बेल नव मालिका कुंद, मोघर तिलक जाति मचकुंद ॥ केतकी दमणके सरस रंग, चंपक रस भीनो रे ॥ चं० ॥ ॥ १ ॥ इत्यादिक शुभ फूल रसाल, घर विरचे मन रंजन लाल ॥ जाली झरोखा चितरी शाल, सुर मंडप कीनो रे ॥ चं० ॥ २ ॥ गुच्छ झुमखां लंबां सार, चंद्रुआ तोरण मनोहार ॥ इंद्रभुवनको रंगधार, भव पातक छीनो रे ॥ चं० ॥ ३ ॥ कुसुमायुधके मारन काज, फूलघरे थापे जिनराज ॥ जिम लहियें शिवपुरको राज, सब पातक खीनो रे ॥ चं० ॥ ४ ॥ आतम अनुभव रसमें रंग, कारण कारज समझ तुं चंग ॥ दूर करो तुम कुगुरु संग, नरभव फल लीनो रे ॥ चं० ॥ ५ ॥ (ए पूजा

पढकें प्रभुकुं फूलघर चढावे ॥ इति एकादश पुष्प गृह पूजा ॥ ११ ॥)

॥ अथ द्वादश पुष्पवर्षणपूजा प्रारंभः ॥

(पांच वरणका सुगंध फूल, हाथमें लेकें इस मुजब पढे.)

॥ दोहा ॥

॥ बादल करी वरषा करे, पंचवरण सुर फूल ॥
हरे ताप सब जगतको, जानूदघन अमूल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अडिल छंद ॥ फुल पगर अति चंग रंग बादर करी, परिमल अति महकंत मिले नर मधु करी ॥ जानुदघन अति सरस विकच अधो वींट हे, वरसे बाधारहित रचे जेम छीट हे ॥

॥ राग काफी ॥ ताल दीपचदी ॥ साचा साहेब मेरा चिंतामणि स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ मंगल जिन नामें, आनंद भविकुं घनेरा ॥ ए आंकणी ॥ फूल पगर बदरी झरो रे, हेठ वींट जिनकेरा ॥ मं० ॥ १ ॥ पीडा रहित ढिग मधुकर

जे, गावत जिनगुण तेरा ॥ मं० ॥ २ ॥ ताप हरे हुं लोकका रे, जिन चरणें जस डेरा ॥ मं० ॥ ३ ॥ अशुभ करम दल दूर गये रे, श्रीजिन नाम रटेरा ॥ मं० ॥ ४ ॥ आतम निर्मल भाव करीने, पूजे मिटत अंधेरा॥ मं० ॥ ५ ॥(ए पढकें फूल उछाले ॥ इति ॥ १२ ॥)

॥ अथ त्रयोदशाष्टमंगलपूजा प्रारंभः ॥

(अष्ट मंगलिक थालमें लेकर इस मुजब पढे.)

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिक दर्पण कुंभ है, भद्रासण वर्धमान॥
श्रीवछ नंदावर्त्त हे, मीनयुगल सुविधान ॥ १ ॥
अतुल विमल खंडित नही, पंच वरणके साल ॥
चंद्रकिरण सम उज्ज्वलें, युवती रचे विशाल॥२ ॥
अति सलक्षण तंदुले, लेखी मंगल आठ ॥
जिनवर अंगे पूजतां, आनंद मगल ठाठ ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ श्रीराग ॥ जिन गुण गात श्रुति अमृतं ॥ ए देशी ॥

॥ मंगलपूजा सुरतरुकंद ॥ ए आंकणी ॥ सिद्धि आठ आनंद प्रपंचे, आठ करमका काटे फंद॥

मं० ॥ १ ॥ आठों मद भये छिनकमें दूरें, पूरे अ
डगुण गये सब धंद ॥ मं० ॥ २ ॥ जो जिन आठ
मंगलशुं पूजे, तस घर कमला केलि करंद ॥ मं०
॥ ३ ॥ आठ प्रवचन सुधारस प्रगटे, सूरि सपदा
अतिही उत्तंग ॥ म० ॥ ४ ॥ आतम अडगुण
चिदघन राशि, सहज विलासी आतम चंद ॥
॥ मं० ॥ ५ ॥ यह पढके प्रभु आगें अष्ट मंगल
चढावे ॥ इति ॥ १३ ॥)

॥ अथ चतुर्दशधूपपूजा प्रारंभः ॥

(धूप रकेबीमें लेकें मुखसें इसमुजब पढे.)

॥ दोहरा ॥

॥ मृगमद अगर सेलारस, गंधवटी घनसार ॥
कृष्णागर शुद्ध कुंदरु, चंदन अंबर भार ॥ १ ॥
सुरभि द्रव्य मिलायकें, करे दशांगज धूप ॥ धूप
धाणमें ले करी, पूजे त्रिभुवनभूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग पीलु ॥ ताल–दीपचंदी ॥

॥ मेरे जिनंदकी धूपसें पूजा, कुमति कुगंधी
दूर हरी रे ॥ मेरे० ॥ ए आंकणी ॥ रोग हरे करे

निजगुण गंधी, दहे जंजीर कुगुरुकी बंधी ॥ निर्मल भाव धरे जग धंदी, मुझे उतारो पार, मेरा किरतार, के अघ सब दूर करी ॥ मे० ॥ १ ॥ ऊर्ध्व गति सूचक भवि केरी, परम ब्रह्म तुम नाम जपे री ॥ मिथ्यावास दुखराशि झरे री, करो निरंजन नाथ, मुक्तिका साथ, के ममता मूल जरी ॥ मे० ॥ २ ॥ धूपसें पूजा जिनवर केरी, मुक्तिवधू भइ छिनकर्में चेरी ॥ अब तो क्यों प्रभु कीनी देरी, तुमही निरंजन रूप, त्रिलोकी भूप, के विपदा दूर करी ॥ मे० ॥ ३ ॥ आतम मंगल आनंदकारी, तुमरी चरण सरन अवधारी ॥ पूजें जेम हरी तेम आगारी, मंगल कमला कंद, शरदका चंद, के तामस दूर हरी ॥ मे० ॥ ४ ॥ (यह पदकें प्रभुकुं धूप उखेवे ॥ इति धूप पूजा ॥ १४ ॥)

॥ अथ पंचदश गीतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ग्राम भले आलापिने, गावे जिनगुण गीत॥
भावे शुद्धज भावना, जाचे परम पुनीत ॥ १ ॥

फल अनंत पंचाशकें, भाखे श्रीजगदीश ॥ गीत नृत्य शुध नादसें, जो पूजे जिन ईश ॥ २ ॥ तीन ग्राम स्वर सातसें, मूरछना एकवीश ॥ जिन गुण गावे भक्तिशुं, तार तीस ओगणीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग सोयणी—ठेको पंजावी ॥

॥ जिन गुण गावत सुरसुंदरी ॥ ए आंकणी ॥ चंपकवरणी सुर मनहरणी, चंद्रमुखी शृंगार धरी ॥ जि० ॥ १ ॥ ताल मृदंग बंसरी मंडल, वेराड उ पांग धुनि मधुरी ॥ जि० ॥ २ ॥ देव कुमार कु मारी आलापे, जिनगुण गावे भक्ति भरी ॥ जि० ॥ ॥ ३ ॥ नकुल मुकुंद वीण अति चंगी, ताल छंद अयति समरी ॥ जि० ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकाशी, चिदानंद सत् रूप धरी ॥ जि० ॥ ॥ ५ ॥ अजर अमर प्रभु ईश शिवंकर, सर्व भयं कर दूर हरी ॥ जि० ॥ ६ ॥ आतम रूप आनंद घन संगी ॥ रंगी निज गुन गीत करी ॥ ७ ॥ इति १५ ॥

॥ अथ षोडश नाटक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाटक पूजा सोलमी, सजि सोले शणगार ॥ नाचे प्रभुनी आगलें, भव नाटक सब टार ॥१ ॥ देव कुमर कुमरी मली, नाचे एक शत आठ ॥ रचे संगीत सुहावना, बत्तिस विधका नाट ॥ २ ॥ रावण ने मंदोदरी, प्रभावती सुरियाभ ॥ द्रौपदी ज्ञाता अंगमें, लियो जन्मको लाभ ॥ ३ ॥ टालो भव नाटक सवी, हे जिन दीन दयाल ॥ मिल कर सुर नार करें, सुधर बजावे ताल ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग कल्याण ॥ ताल दादरो ॥

॥ नाचत सुर वृंद छंद, मंगल गुन गारीं ॥ ए आंकणी ॥ कुमर कुमरी कर सकेत, आठ शत मिल भ्रमरी देत ॥ मंद्र तार रण रणाट, घुंघरुं पग धारी ॥ ना० ॥ १ ॥ बाजत जिहां मृदंग ताल, धप मप धुधु मकिट धमाल ॥ रंग चंग द्रंग द्रंग, ञौं ञौं त्रिक तारी ॥ ना० ॥ २ ॥ तता थेइ थेइ तान लेत, सुरज राग रंग देत ॥ तान मान गान

जान, किट नठ धुनि धारी ॥ ना० ॥ ३ ॥ तुं जिनंद शिशिर चंद, मुनिजन सब तार वृंद ॥ मंगल आनंद कंद, जय जय शिवचारी ॥ ना० ॥ ४ ॥ रावण अष्टापद गिरिंद, नाच्यो सब साज संग ॥ बांध्यो जिन पद उत्तंग, आतम हित कारी ॥ ना० ॥ ५ ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश वाजित्र पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ततँ वीतत घन जुसरे, वाद्यं भेद ए चार ॥ विविध ध्वनि कर शोभते, पुजा सतरमी सार ॥ १ ॥ समवसरणमें वाजिया, नाद तणा झंकार ॥ ढोल ददामा दुंदुभी, भेरी पणव उदार ॥२॥ वेणू वीणा किंकिणी, पडू भ्रामरी मरदंग ॥ झलरी भंभा नादशुं, शरणाई मुरजंग ॥ ३ ॥ पंच शब्द वाजें करी, पूजे श्री अरिहंत ॥ मनवांछित फल पामियें, लहियें लाभ अनंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग–जंगलो ताल ठुमरीकी ॥ मन मोह्या जंगलकी हरणी ने ॥ ए ऐशी ॥

भवि नंदो जिनंद जस वरणीने ॥ ए आंकणी ॥ वीण कहे जग तुं चिर नंदे, धन धन जग

तुम करणीने ॥ भ० ॥ १ ॥ तुं जगनंदी आनंद कंदी, तपली कहे गुण वरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥ निर्मल ज्ञान वचन मुख साचे, तूण कहे दुख हर णीने ॥ भ० ॥ ३ ॥ कुमति पंथ सब छिनमें नासे, जिन शासन उदेधरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥ मंगल दीपक आरति करतां, आतम चित्त शुभ भरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति सत्तरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ रेखता ॥ जिनंद जस आज में गायो, गयो अघदूर मो मनको ॥ शत अठ काव्य हू करकें, थुणे सब देव देवनको ॥ जि० ॥ १ ॥ तप गच्छ गगन रवि रूपा, हुआ विजयसिंह गुरु भूपा ॥ सत्य कर्पूर विजयराजा, क्षमा जिन उत्तमा ताजा ॥ ॥ जि० ॥ २ ॥ पद्म गुरु रूप गुण भाजा, कीर्ति कस्तूर जग छाजा ॥ मणीबुध जगतमें गाजा, मुक्ति गणि संप्रति राजा ॥ जि० ॥ ३ ॥ विजय आनंद लघु नंदा, निधि शशी अंक हे चंदा ॥ अंबाले नग्रमें गायो, निजातम रूप हुं पायो ॥ ॥ जि० ॥ ४ ॥ इति मुनि आत्मारामजी आनंद विजयजी कृत सत्तरभेदी पूजा संपूर्णा ॥

॥अथ वीशस्थानकपूजाऽध्यापन विधिः॥

॥ वीश स्थानकनुं तप मांडतां अथवा एक एक ओली संपूर्ण थाय तेवारें, अथवा तप न कर्युं होय अने स्वाभाविक भाव भक्तियें पूजा भणाववी होय, तो तेनो विधि आ प्रमाणें छेः—

॥ दिनशुद्धियें शुभ उत्सवें आसन उपर एक पंक्तियें वीश प्रतिमा अलंकारसहित स्थापियें. तेनी आगल वली उपरा उपर त्रण बाजोठ मांडिने, तेनी उपर पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करीने. प्रथम लघु स्नात्र भणावियें. पछी तीर्थकूपादिकनां पवित्र जल आडंबरें सहित प्रथमथीज लावी मूकेलां होय, ते जलने सुवासित करी, ते जलमांथी थोडे थोडे जलें करी वीश कलश भरीने, पवित्र थयेला वीश पुरुषना हाथमां आपी तेमने उभा राखवा.

॥ वली ते वीश अभिषेक करवाने अर्थें एक पुरुष, फूलनी माला, एक पात्रमां राखे, एक पुरुष चंदन केशरनो प्यालो राखे, एक पुरुष दीवामां पूरवाने अर्थें घृतनुं पात्र राखे, एमज फल, अक्षत

नैवेद्य, धूप प्रमुख जे सामग्री मेलवेली होय, ते सर्व चीज एक एक पुरुष पोतपोताना स्वाधी नमां राखे.

॥ तेवार पछी एक पंक्तियें राखेली वीश प्रतिमा मांहेथी एक प्रतिमा लेइने, स्नात्र भणावेली पंचतीर्थी प्रतिमा पासें स्थापन करी सर्व जनो वीश स्थानकनी पूजा मांहेलुं प्रथम स्तवन, रुडी रीतें भणीने प्रतिमाजी उपर वीशे कलश नाखे. तेवार पछी एक जण प्रतिमाजीने अंगलूहणुं करे, एक पुरुष प्रतिमानुं पूजन करे, एक पुरुष फूलनी माला चढावे, एक पुरुष प्रतिमा आगल बार स्वस्तिक करीने तेनी उपर फूल मूके, ए जेम प्रथम श्रीअरिहंत पदना बार गुण छे, तो त्यां बार स्वस्तिक करवा कह्या, तेमज जे जे पदना जेटला जेटला गुण होय, ते ते पदनी पूजामां तेटला तेटला स्वस्तिक करवा एवी रीतें नैवेद्यादिक सर्व वस्तु चढावीने, जिन प्रतिमाने रूपानाणे पूजन करी फरी प्रथम स्थानकें पधरावीने, पछी पूर्वोक्त वीश प्रतिमानी पंक्तिमांथी बीजी प्रतिमा लेइने पंच तीर्थिकनी प्रतिमा पासें स्थापन

करे. तेवार पछी फरी वीश कलश थोडे थोडे जलें भरीने बीजुं स्तवन कही, प्रथमनी परें बीजो सर्व विधि करे. एम वीशे पदने विषे विधि करवो. विधि पूर्ण थया पछी छेवट आरति, मंगल दीवो करे. ए उत्कृष्ट विधि कह्यो, अंतमां मिच्छामि दुक्कड देवो पछी गुरुपूजा, प्रभावना, साहामिवात्सल्य करवुं.

॥ अने घणी शक्ति न होय तो एक पुरुष एक कलश लइ एक एक स्तवन कही पंचतीर्थिनीज पूजा करे. एम वीश वखत वीश स्तवन कहीने पूजे. एम एकज पंचतीर्थिक आगल यथाशक्ति क्रिया करे तोपण चाले. कारण के द्रव्यथकी अशक्तने जो भावनुं बाहुल्य छे तो तेने तेटलुं पण अत्यंत फल दायक थाय छे.
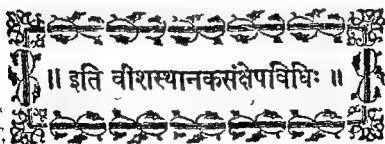
श्रीमद्आत्मारामजी आनंदविजयजीकृत
विंशतिस्थानकपूजाप्रारभ्यते.

तत्र

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजाप्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ समरस रसभर अघहर, करम भरम सब नास ॥ कर मन मगन धरम धर, श्रीशंखेश्वर पास ॥ १ ॥ वस्तु सकल प्रकाशिनी, भासिनि चिद्घनरूप ॥ स्यादवाद मतकाशिनी, जिनवाणी रसकूप ॥ २ ॥ छठे अंग आवश्यकें, वीश निमित्त विधान ॥ ते साधे जिनपद लहे, अजर अमरकी खान ॥ ३ ॥ जिन गणधर वाणी नमी, आणी भाव उदार ॥ विंशति पद पूजन विधि, कहिशुं विधि विस्तार ॥४॥ विंशति तप पद सारिखी, करणी अवर न कोय ॥ जो भवि साधे रंगशुं, अर्हन्रूपी होय ॥ ५ ॥ क्रमसे पीठ त्रिकोपरें, थापी जिनवर वीश ॥ सामग्री सहु मेलिने, पूजे त्रिभुवन ईश ॥ ६ ॥ एक एक पद पूजियें, पंच

अष्ट सत्तार ॥ द्रव्यार्चनविधि जाणियें, इगविस विधि विस्तार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ राग–धन्याश्री ॥ दो नयणांदा मारया मरजादा परदेशीडा॥
॥ ए देशी ॥

॥ अरिहंत पद मनरंग, चिदानंद अरिहंत पद० ॥ ए आंकणी ॥ चिदानंदघन मंगलरू पी, मिथ्याति मिर दिणंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ १ ॥ चौतिस अतिशय पैंतिस वाणी, गुण बारे सुख कंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ २ ॥ महागोप महामाहण कहियें, काटे भव भव फंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ३॥ निर्यामक सत्थवाह भणीजें, भवि चकोर मनचं द ॥ चि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ चार निक्षेप रूप जग रंजन, भंजन करम नरिंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव वामा वश कीने, तुं निकलंक महिंद ॥ ॥ चि० ॥ अ० ॥ ६ ॥ ज्ञायक नायक शुभगति दायक, तुं जिन चिद्घन वृंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ॥ ७ ॥ देवपाल श्रेणिक पद साधी अरिहंत पद निपजंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सर्व शिवंकर ईश निरंजन, गत कलिमल सब धंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ९ ॥ जिनके पंच कल्याणिक जगमें, करे उद्यो

त असंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ १०॥ आतम निर्मल भाव करीने, पूजो त्रिभुवन इंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ॥ ११ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं ॥
॥ जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
॥ निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं ॥
॥ कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

मंत्रः

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते अर्हते जलादिकं यजामहेस्वाहा ॥ आ काव्य तथा मंत्र प्रत्येक पूजा दीठ कहेवा.

॥ अथ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ तनु त्रिभाग दूरें करी, घन स्वरूप अघ नाश ॥ ज्ञान स्वरूपी अगमगति, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥ अक्षर अमर अगोचरा, रूप रेख विन लाल ॥ जे पूजे सो भवि लहे, अरहत् पद उजमाल ॥ २ ॥

॥ कौंन्हा में नहि रहेणा रे, तुमचे रे संग चलुं ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्ध अचल आनंदी रे, ज्योतिमें ज्योति मिली ॥ ए आंकणी ॥ अज अलख अमूरति रे, निजगुण रंग रली ॥ सि० ॥ १ ॥ शिव अजर अनंगी रे, करमको फंद दली ॥ सि० ॥ २ ॥ समय एकमें त्रिपदी रे, नास थिर आविर वली॥ सि० ॥ ३ ॥ ऋजु एक समय गतिका रे, अनंत चतुष्टय मिली ॥ सि० ॥ ४ ॥ गुण इक त्रिश धारी रे, निर्मल पाप गली ॥ सि० ॥ ५ ॥ त्रिहुं कालके देवा रे, सब सुख मेल मिली ॥ सि० ॥ ॥ ६ ॥ गुणानंत करीजें रे, वरगित वरग वली ॥ सि० ॥ ७ ॥ नभ एक प्रदेशें रे, सब सुख पुंज मिली सि० ॥८॥ लोकालोक नमावे रे, जिनवर तत्र चली ॥ सि० ॥ ९ ॥ बंधन छेद असंगा रे, पूर्व प्रयोग फली ॥ सि० ॥ १० ॥ गति करण निदाना रे, सुमति संग भली ॥ सि० ॥ ११ ॥ हस्तिपाल आराधी रे, जिनपद सिद्ध तुली ॥ सि० ॥ १२ ॥ प्रभु आत्मानंदी रे, पूजत कुमति टली॥ सि० ॥ १३ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्र० ॥ ॐ ह्रूँ श्री पर० ॥ सिद्धाय जला०॥य०॥ इति॥२

॥ अथ तृतीय प्रवचनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजे प्रवचन पूजीयें, करि कुमतिसंग दूर ॥ मिथ्या मत टाली सवे, जन्म मरण दुख चूर ॥१॥ भाव रोगकी औषधी, अमृतसिंचनहार ॥ भव भय ताप निवारिणी, अरिहंत पद फलकार ॥२॥

॥ राग वढंस ॥

॥ प्रवचन पद भवपार उतारे, पूजो भवि मन रंग रे ॥ प्रव० ॥ ए आंकणी ॥ प्रवचन अमृत रस भरी ध्यानें, चिदघन रंग रंगील रे ॥ कुमति जाल सब छिनकमें जारे, प्रगट अनुभव लील रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ तीनशो साठ तीन (३६३) मतधारी, जगमें तिमिर अज्ञान रे ॥ जो जिनवचन सूर तम नाशक, भासक अमल निधान रे॥ प्र० ॥ २ ॥ सप्तभंगी नय सप्त सुहंकर, शुक्रमान दोय सार रे ॥ षड्भंगी उत्सर्गादिकनी, अडपक्ष सम्यककार रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनाधार संघ जग साचो, जिन पूजे भवपार रे ॥ अरिहंत धर्म कथानक अवसर, करत प्रथम नमोकार रे ॥

प्र० ॥ ४ ॥ प्रवचन अमृत जलधर वरसे, भवि मन अधिक उल्लास रे ॥ कुमति पंथ अंधजन जे ते, सूकत जेसें जवास रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ संभव नरपति प्रवचन साधी, तीर्थंकर पद स्थान रे ॥ पंच अंग ताली सद्गुरुकी, प्रवचन संघ निधान रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ आत्म अनुभव रत्न सुहंकर, अचर अनघ पद खान रे ॥ जो भवि पूजे मन तन शुद्धें, अरिहंत पदको निदान रे ॥ प्र० ॥७॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ पर०॥ श्रीप्रवचनाय जलादिकं० ॥ य० ॥ इति तृतीय प्रवचन पद पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थे सूरिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथे पद सूरी नमो, चरण करण पद धार॥
सारण वारण नोदना, प्रतिनोदन करतार ॥ १ ॥
षट् त्रिंशत गुण शोभता, संपत पद पंचास ॥
मेदी सम जिनशासनें, भवि पूजे सुखराश ॥ २ ॥

॥ राग काफी—चाल होरीकी—ताल दीपचंदी ॥

॥ अपने रंगमें रग दे, हेरी हेरी लाला, अपने

रंगमें रंग दे ॥ ए आंकणी ॥ पांच आचार अखं
डित पाले, जन्म मरण दुख भंग दे ॥ हेरी० ॥१॥
पंच प्रस्थान जे मंत्र रायकों, स्मरण करे मन रंग
दे ॥ हेरी० ॥ २ ॥ आठ प्रमाद तजे, उपदेशें, शि
वरमणी सुख मंग दे ॥ हेरी० ॥ ३ ॥ चार अनु
योग सुधारस धारे, धरम करन उमंग दे ॥ हेरी०
॥ ४ ॥ सातहि विकथा दूर निवारी, मोह सुभट
संग जंग दे ॥ हेरी० ॥ ५ ॥ श्रुतके सातो अंग
रंगीले, मुझ हृदयेमें टंग दे ॥ हेरी० ॥ ६ ॥ पुरु
षोत्तम नृप जिनपद लीनो, आत्मराज शिव घंग
दे ॥ हेरी० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥
ॐ ह्रूँ श्रीं पर० ॥ श्रीसूरये जलादि० यजा० ॥
इति चतुर्थ सूरिपद पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम थिविर पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम संगी रंगी नही, ज्ञायक शुद्ध स्वरूप॥
भवि जन मन थिर करनकों, जय जय थिविर
अनूप ॥ १ ॥

॥ राग जंगलो झींझोटी–ताल पंजाबी ठेको चाल ठुमरीकी ॥
॥ मत जानां उनमार्ग तनू मन, दाखत सुगुरु सुगुण
वतियां रे ॥ ए देशी ॥

थिविर सुहंकर पदकज पूजी, तीर्थंकर पद सुख गतियां रे ॥ थि० ॥ १ ॥ डिगमिग डिगमिग मन चंचल हय, धरम करे फिर चित्त रतियां रे ॥ थि० ॥ २ ॥ सूत्र थिविर वय व्रत परिणामें, जाने समवायांग वतियां रे ॥ थि० ॥ ३ ॥ साठ वरस व्रत वरस वीसमे, थिर परिचित्त शुद्ध बुद्ध मतियां रे ॥ थि० ॥ ४ ॥ दशविध अंग तिसरे वरने, थिविर गृहे इह जिन व्रतियां रे ॥ थि० ॥५॥ वंदन पूजन नमन करन मती, भक्ति करे शुद्ध पुण्य रतियां रे ॥ थि० ॥ ६ ॥ पद्मोत्तर नृप इह पद सेवी, आत्म अरिहंत पद वतियां रे ॥ थि० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्र० ॥ ॐ ह्रीँ श्री प० ॥ थिविराय ज० ॥ य० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठपाठकपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

स्यादवाद नय पंथमें, पंचानन बलपूर ॥
दुर्नय वादी वृंदने, करे छिनकमें दूर ॥ १ ॥
पठन करावे शिष्यने, स्व पर सत्तातूर ॥
मिथ्या तिमिर विनाशनें, जय जय पाठक सूर ॥२॥

॥ राग खमाच ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ वीतरागकों देख दरस, दुविधा मोरी मिट गइ रे ॥ वि० ॥ ए देशी ॥

पाठक पद सुख चेन देन, वस अमीरस भीनो रे ॥ पाठक० ॥ ए आंकणी ॥ स्वपर रूप विकासीचंद, अनुभव सुर तरु केरो कंद ॥ स्यादवाद मुख उचरे छंद, जिन बचरस पीनो रे ॥ पा० ॥ १ ॥ कुमति पंथतम नाशक सूर, सुमति कंद घनवर्द्धन पूर ॥ दे उपदेश संत रसभूर, अघ सब क्षय कीनो रे ॥ पा० ॥ २ ॥ त्रीजे भव शिवरमणी चंग, चरण करण उपदेशक रंग ॥ कर्म निकंदन करण भंग, सुर असुर पूजीनो रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ हय गय वृषभ सिंह सम किन, उपेंद्र इंद्र चक्री दिन इन ॥ चंद्र भंडारी उपमा दीन, नग

मेरु करीनो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जंबू सीतासरित वखान, चरम जलधि तिम गुण मणि खान ॥ षोडश उपमा करी विधान, बहुश्रुत जस लीनो रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ अवगुण चौदे दूर करीन, प नर गुणकारी शिष्य पीन ॥ सरस वचन जिम तंत्री वीन, निज गुण सब चीनो रे ॥ पा० ॥६॥ महेंद्रपाल पद सेवी सार, तीर्थंकर पद लीनो सा र ॥ मदन भरमकों जार जार, आत्मरस भीनो रे ॥ पा० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० पाठकाय ज०॥ य० ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम साधुपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

तजी विभाव स्वभावता, रमता समता संग ॥
विशदानंद स्वरूपता, लाग्यो अविहड रंग ॥ १ ॥
माने जग त्रिहुं कालमें, मुनि कहियें तस नाम ॥
साधे शुद्धानंदता, साधु नाम अभिराम ॥ २ ॥

॥ राग जंगलो-ताल दादरो-इंग्रेजी वाजानी चाल ॥

मुणिंद चंद ईश मेरे, तार तार तार ॥ ज्ञानके

सरंग भंग, सात जास कार ॥ मुणि० ॥ १ ॥ सं तके महंत मूनि, साध ऋषि धार ॥ यति व्रती सं जमी हे, जगतको आधार ॥ मु०॥ २ ॥ नवविध भाव लोच, केश दशकार ॥ अनंग रंग भंग संग, सुमतिचंग नार ॥ मु० ॥ ३ ॥ सत्त चाली दोष टाली, लेत हे आहार ॥ सातवीश गूण धार, आ तमा उजार ॥ मु० ॥ ४ ॥ पंचही प्रमादके, क ल्लोल लोल भार ॥ संसारनीरनिधि पोत, ज्योति ज्ञान सार ॥ मु० ॥ ५ ॥ पार करे संत अंत, कर्म का निहार ॥ ब्रह्मचर्य धार वाड, नवरंग लार ॥ मु० ॥ ६ ॥ वीरभद्र साधु सेव, जिनपद सार ॥ आतम उमंग रंग, कुगुरु संग छार ॥ मु० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ साधवे जला०॥य०॥इति सप्तमसाधुपद पूजा ॥७॥

॥ अथाष्टम ज्ञानपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

निज स्वरूपके ज्ञानसें, परसंग संगत छार ॥
ज्ञान आराधक प्राणिया, ते उतरें भव पार ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी अजमेरी–ताल पंजाबी ठेको ॥ लागी लगन कहो केसे छूटे, प्राणजीवन प्रभु प्यारेसे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान सुहंकर चिदघन संगी, रंगी जिनमत सारेमें ॥ रंगी० ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ पांच एकावन भेद ज्ञानके, जडता जग जन टारेमें ॥ जड० ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ भक्ष अभक्ष विवेचन कीनो, कुमति रंग सब ठारेमें ॥ कु० ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा, करम कलंक निवारेमे ॥ कर० ॥ ज्ञान० ॥ ४ ॥ सदसद्भाव विकाशी ज्ञानी, दुर्नय पंथ विसारेमें ॥ दुर्न० ॥ ज्ञान० ॥५॥ अज्ञानीकी करणी एसी, अंक विना शून्य सारेमें ॥ अंक० ॥ ज्ञान० ॥ ६ मति श्रुत अवधि मनःपर्यव हे, केवल सर्व उजारेमें ॥ केव० ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥ अज्ञानी वर्ष एक कोटिमे, करम निकंदन भारेमें ॥ कर० ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वास एकमे, इतके करम विडारेमें ॥ इत० ॥ ज्ञान० ॥ ९ ॥ भरतेश्वर मरुदेवी माता, सिद्धि वरे दुःख जारेमें ॥ सि० ॥ ज्ञान० ॥ १० ॥ देश विराधक सर्वाराधक, भगवती वीर उजारेमे ॥ भ० ज्ञान० ॥ ११ ॥ जयत नरेश्वर यह पद साधी, आ

तम जिनपद धारेमें ॥ आ० ॥ ज्ञान० ॥ १२ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्र० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ ज्ञानाय जला० ॥ य० ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम दर्शनपद पूजा प्रारंभ ॥

दोहा ॥

॥ तत्व पदारथ नव कहे, महावीर भगवान ॥ जो सर्द्दे सदभावसें, सम्यग्दर्शी जान ॥ १ ॥ श्रद्धा विण नही ज्ञान हे, तद विण चरण न होय ॥ चरण विना मुक्ती नही, उत्तरज्झयणे जोय ॥ २ ॥

॥ राग–परज मारू ताल–दीपचंदी ॥
॥ निशिदिन जोवुं वाटडी, घेर आवो ढोला ॥ ए देशी ॥

दर्शन पद मनमें वस्यो, तब सब रंग रोला ॥ जगमें करणी लाख छे, एक दर्श अमोला ॥ ॥ द० ॥ १ ॥ दर्शन विण करणी करी, एक कोडी न मोला ॥ देवगुरु धर्म सार हे, इनका क्या मोला ॥ द० ॥ २ ॥ दर्शन मोहनी नाशसें, अनुभव रस घोला ॥ जिन दर्शन पूजन करे, एही हर्ष कलोला ॥ द० ॥ ३ ॥ सम संवेग निवेंदता, आस्ति करुणा तंबोला ॥

मानीयें, समकित रस चोला ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मुहूरत फरसीयें, दर्शन सुख डोला ॥ निश्चय मुक्ती पामीयें, जिनवर एम बोला ॥ द० ॥ ५ ॥ इग दुग ती चउ सर दसे, सतसठ भेद तोला ॥ दर्शन पायो सिज्जंभवें, देखी प्रतिमा अमोला ॥ ॥ द० ॥ ६ ॥ हरिविक्रम नृप सेवना, अंतर दृग खोला ॥ आतम अनुभव रंगमें, मिटे मनका झोला ॥ द० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ दर्शनाय जला० ॥ य० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम विनयपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुण अनंतको कंद हे, विनय भुवन शृंगार॥ विनयमूल जिनधर्म हे, विनयिक धन अवतार ॥ १ ॥ पांच भेद दस तेरसा, वावन बासठ मान ॥ आगममें वीनय तणा, भेद कह्या भग वान ॥ २ ॥

॥ राग-जंगलो-ताल दीपचंदी ॥ एकली जानसें;
मे तो दुःख सह्यो री ॥ ए देशी ॥

॥ सखी में तो विनय पिछाना री, अनंतें कालसें ॥ स० ॥ अ० ॥ १ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुलगणसंघा, किरिया धर्म सुज्ञाना री ॥ स०॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ ज्ञानी सूरी थिविर पाठक, गणी पद तेरा विधाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ३ ॥ अनाशातना भक्ति सुहंकर, अतिमान गुण गाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ४ ॥ दोय सहसने चिहुत्तर अधिकें, वंदन देव विधाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ५ ॥ चारसो बावन गुरुवंदन विधि, विनयी जन चित्त आनां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिनवंदन हित अति भारी; दुर्गति नाश करानां री ॥ स० ॥अ०॥७॥ श्रद्धा भासन तत्व रमणता, विनयी कार जगानां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ८ ॥ धन्ना एह पद विधिशुं सेवी, आत्मरंग भरानां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ९ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॐ ह्रीँ श्रीँ पर०॥ विनयाय जला० ॥ यजाम० ॥ इति ॥ १० ॥

———o○o○o———

॥ अथैकादश चारित्रपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरण शरण भवजल तरण, चरण शरण सुख सार ॥ रंक महंत करे सही, सुरवर सेवाकार ॥ १ ॥ तीन जगतपति पद दिये, इंद्रादिक गुण गाय ॥ कलिमल पंकपरवारनो, जय जय संयम राय ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ—ताल जंपक तथा त्रीताल ॥ लगीलो नाभी नंदनशुं, लगीलो ॥ ए देशी ॥

॥ चरण पद मनरंग ॥ रे जीया ॥ च० ॥ ए आंकणी ॥ आठ कर्मका संचकों जें, रिक्त करे भय भंग ॥ चर० ॥ चारित्र नाम निरुक्ते मान्यो, शिवरमणीको संग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ १ ॥ षट खंडकेरु राज्य जेहनें, रमणी भोग उत्तंग ॥ चक्री संजम रसमें लीनो, चिद्घन राज अभंग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ २ ॥ बारे कषाय जरे जब कीनी, प्रगटे संयम चंग ॥ आठ कषाय गये अणुविरती, चारित्र मोह विरग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ ३ ॥ वर्ष संयम के सुखकी श्रेणी, अनुत्तर सुर सुख चंग ॥ तत्व

रमणता संयम विण नही, समर अमर अनंग ॥
रे जी० ॥ च० ॥ ४॥ वरुण देव संयम पद साधी,
अरिहंत रूप असंग ॥ आतमानंदी सुरनर वंदी,
प्रगट्यो ज्ञान तरंग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ ५ ॥
काव्यम् ॥ अतिश०॥ मन्त्रः॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ परम०॥
चारित्राय जला० ॥ यजा० ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश ब्रह्मचर्यपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कामकुंभ सुरतरु मणी, सब व्रत जीवन सार ॥
कामित फलदायक सदा, भव दुख भंजनहार ॥१॥
तारागणमें उडुपति, सुरगणमें जिम चंद ॥
विरति सकल मुख मंडना, जय जय ब्रह्म थिरिंद.२

॥ राग सोरठी सामेरी–ताल दीपचंदी–मध्यरात्रि समयकी,
श्याम नेक दया मोसें न करी, नेम नेक० ॥ ए देशी ॥

श्याम ब्रह्म सुहंकर लख री ॥ श्याम० ॥ ए
आंकणी ॥ कुमति संग सब शुधबुध भूली, अनु
भव रस अब चख री ॥ श्याम० ॥ १ ॥ नव वा
डें शुद्ध ब्रह्म आराधे, अजर अमर तुं अलख री ॥
श्याम० ॥२॥ औदारिक सुर कामजालसें, अपने

आपकों रख री ॥ श्याम० ॥ ३ ॥ सिंहादिक प
शु भय सब नाशे, ब्रह्मचर्य रस चख री ॥ श्या०
॥ ४ ॥ विजयशेठ विजया गुणवंती, सुदर्शन का
म कख री ॥ श्याम० ॥ ५ ॥ दशमे अंगें बत्रीश
उपमा, ब्रह्मचर्यकी दख री ॥ श्याम० ॥ ६ ॥ आ
तम चंद्रवर्म नरवर ज्युं, अरिहंत पद सुख अख
री ॥ श्या० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिशया० ॥
मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ ब्रह्मचर्याय जला० ॥
यजाम० ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश क्रियापद पूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

चिद विलास रस रंगमें, करे क्रिया भवि चंग ॥
करम निकंदन यश भरे, उछले ज्ञान तरंग ॥१॥
आगम अनुसारी क्रिया, जिनशासन आधार ॥
प्रवर ज्ञान दर्शन लहे, शिवरमणी भरतार ॥ २ ॥

॥ राग माढ-ताल लावणीकी-फलवर्द्धी पारसनाथ, प्रभुकों
पूजो तो सही ॥ ए देशी ॥

थारी गइ रे अनादि निंद, जरा टुक जोवो तो
सही ॥जोवो तो सही॥मेरा चेतन जोवो तो सही॥

थ्रा०॥ ए आंकणी॥ ज्ञान संग किरिया दुःखहरणी, नेवो तो सही॥मेरा चेतन नेवो तो सही॥एह धर्म शुक्र शुद्ध ध्यान हृदयमें, प्रोवो तो सही ॥ मे०॥ था० ॥ १ ॥ आर्त्त रौद्रनी पणवीस क्रिया, खोवो तो सही ॥ मे० ॥ अनुभव समरस सार जरा तुम्म, टोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ २ ॥ अड दिठी समता जोगनी किरिया, ढोवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रथम चार तजी चार ग्रही पर, होवो तो सही ॥ मे०॥ था० ॥३॥ समकितकी करणी दुःखहरणी, लेवो तो सही ॥ मे० ॥ ढुक दूर नय पंथ विडार ज्ञान रस, गोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ४ ॥ अंतर तत्त्व विषय मन प्रीति, छोवो तो सही० ॥ मे० ॥ एह ज्ञान क्रिया निज गुण रंग राची, थोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ५ ॥ अशुभ ध्याननां थानक त्रेशठ, खोवो तो सही ॥ मे० ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य बीज ढुक, बोवो तो सही ॥ ॥ मे० ॥ था० ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया जडता संग, धोवो तो सही ॥ मे० ॥ एह हरिवाहन आतम रस चाखी, मेवो तो सही ॥ मे०॥ था०॥७॥ काव्यम्॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० ॥ क्रियायै फ०॥ य० ॥ इति त्रयोदश क्रिया पद पूजा ॥१३॥

॥ अथ चतुर्दशतपपद पूजा प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

उपशम रस युत तप भलुं, काम निकंदन हार ॥
कर्म तपावे चीकणां, जय जय तप सुखकार ॥१॥

॥ राग विहाग ॥ ताल दीपचंदी ॥

युं सुधरे रे सुज्ञानी, अनघ तप ॥ युं० ॥ ए आंकणी ॥ कर्म निकाचित छिनकमें जारे, निर्दंभ तप मन आनी ॥ अ० ॥ १ ॥ अर्जुन माली दृढप्रहारी, तपशुं धरे शुभ ध्यानी ॥ अ० ॥ २ ॥ लाख अग्यारह एंशी हजारह, पंच सय गिने ज्ञानी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इतने मास उमंग तप कीनो, नंदन जिनपद ठानी ॥ अ० ॥ ४ ॥ संवत्सर गुणरत्न पीनो, अतीमुक्त सुख खानी ॥ अ० ॥ ५ ॥ चौद सहस मुनिवरमें अधिको, धन धन्नो जिनवानी ॥ अ० ॥ ६ ॥ कनककेतु तप शुच पद सेवी, आतम जिनपद दानी ॥ अ० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० ॥ तपसे जला० ॥ य० ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश दानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

दानें भवसंकट मिटे, दानें आनंद पूर ॥ दानें जिनवर पद लहे, सकल भयंकर चूर ॥ १ ॥ अभय सुपातर दान दे, निस्तारिया संसार ॥ मेघ सुमुख वसुमति धना, कहत न आवे पार ॥ २ ॥

राग जंगलो–ठेको पंजाबी–रच्यो सिरि वृंदावन, रास तो गोविंद रच्यो ॥ एदेशी ॥

दान तो अभंग दीजें, मन धरी रंग ॥ दान तो० ॥ ए आंकणी ॥ खान तो अमर अंज, सुख तो अभंग ॥ गौतम रतनसम, पात्र सुरंग ॥ दान तो० ॥ १ ॥ कनक समान मुनि, पात्र उत्तंग ॥ देशाविरति पात्र रौप्य, मध्यम सुमंग ॥ दा० ॥ २ ॥ समदर्शि जीव मानो, जघन तरंग ॥ कांस्य पात्र पात्रसम, सुख दे निरंग ॥ दा० ॥ ३ ॥ शालिभद्र कृत पुन्ना, धन्ना शुभचंद ॥ दानसे अनंत सुख, कहत जिणंद ॥ दा० ॥ ४ ॥ दानसे हरिवाहन लीनो, जिनपद संग ॥ आतम आनंद कंद, सहज उमंग ॥ दा० ॥ ५ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं पर० ॥ दानाय जला० ॥ यजाम० ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडशवैयावृत्त्यपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

वैयावच्च पद सोलमे, अखिल विमल गुणखान ॥ ए अप्रतिपाती खरो, आगम कथित निदान ॥ ॥ १ ॥ जिनसूरी पाठक मुनि, बालक वृद्ध गिलान ॥ तपी संघ जिनचैत्यनुं. वेयावच्च विधान ॥ २ ॥

॥ राग जंगलो झींझोटी ॥ ताल पजाबी ठेको-गिरनारीकी पाहाडी पर केसे गुजरी ॥ गिर० ॥ ए देशी ॥

शुद्ध वेयावच्च करी जिनपद वर री ॥ शुद्ध०॥ ए आंकणी ॥ तीर्थंकर केवलि मनपर्यव, अवधि चतुर्दश पुव्वधरी री ॥ शुद्ध० ॥ १ ॥ दशपूर्वी उत्कृष्ट चरणधर, लब्धिवंत ए जिन सगरी ॥शुद्ध० ॥ २ ॥ जिनमंदिर जिन चैत्य करावे, पूजा करे मन तनु सुधरी ॥ शुद्ध० ॥ ३ ॥ दशमे अंगें जिनवर भाखे, कुमति कुसंग दुर भगरी ॥ शुद्ध० ॥ ४ ॥नवपद शेष सूरीश्वर आदि, वैयावृत्त्यकर उठि जगरी ॥ शुद्ध० ॥ ५ ॥सतपंच मुनिनुं वेयावच्च करीने, भरत बाहुल शिवमगरी ॥ शुद्ध० ॥ ॥ ६ ॥ नृप जिमूतकेतु पद साधी, आतम जिन पद रस गगरी ॥ शु० ॥७॥ काव्यम् अतिश० ॥

॥ २ ॥ निर्युक्ति शुद्ध टीका चूर्णी. मूल भाष्य सुख भरणीने ॥ भवि० ॥ ३ ॥ संप्रदाय अनुभव रसरंगें, कुमति कुपंथ विहरणीने ॥ भवि० ॥ ४ ॥ सदगुरुकी ए तालिका नीकी, रतन संदुख उद्धर णीने ॥ भवि० ॥५॥ इन विन अर्थ करे सो तस्कर, काल अनंता मरणीने ॥ भवि० ॥ ६ ॥ सम्मति कर्म्म ग्रंथ रत्नाकर, छेद ग्रंथ दुःख हरणीने ॥ भवि० ॥ ७ ॥ द्वादशार वली अंग उपांग, सप्तभंग शुद्ध वरणीने ॥भवि० ॥ ८ ॥ इत्यादिक भवि ज्ञान अपूरव, पठन करे धरे चरणीने ॥ भवि० ॥ ९ ॥ सागरचंद जिनपद पायो, आतम शिव वधु पर णीने ॥ भवि० ॥ १० ॥ काव्यम् ॥ आतिश० ॥ मंत्रः॥ ॐ ह्रीं श्रीप०॥अभिनवज्ञानपदायज०॥य०

॥ दोहा ॥

पाप तापके हरणकों, चंदन सम श्रुत ज्ञ...
श्रुत अनुभव रस राचीयें, माचियें जिन...
न ॥ १ ॥ इगुणविश पद पूजीयें, ...
अभंग ॥ तीर्थंकर पद भवि लहे, ...
संग ॥ २ ॥

॥ राग श्याम कल्याण ॥ श्रीराधे राणी ॥ दे डारो ने बांसरी हमारी ॥ श्रीराधे० ॥ ए देशी ॥

श्री चिदानंद विमारो ने, कुमति जो मेरी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ दुषम कालमें कुमति अंधेरो, प्रगट करे सब चोरी ॥ श्री० ॥ १ ॥ बत्तीस दोष रहित श्रुत वांचे, आठगुणें करी जोरी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अरिहंत गणधर भाषित नीको, श्रुत केवली बल फोरी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ प्रत्येक बुद्ध दश पूरवधर, श्रुत हरे भवकों री ॥ श्री० ॥ ४ ॥ आठ आचार जो कालादिक हे, साधे करमनी चोरी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चारोहि अनुयोग गुरुगम वांचे, टूटे कूपंथनी दोरी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चौद भेद श्रुत वीश भेद हे, अंग पयन्नाको री ॥ श्री० ॥ ७ ॥ रत्नचूड नृप ए पद सेवी, आतम जिनपद हो री ॥ श्री० ॥ ८ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ श्रुतायजला० ॥ य० ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ विंशति तीर्थपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

जिनमतकी परभावना, करे प्रभावक आठ ॥
श्रावक धन खरची करे, रथयात्रादिक ठाठ ॥ १ ॥

प्रावचनी अरु धर्मकथी, वाद निमित्त सुज्ञान ॥
तपी सिद्ध विद्या कवि, आठ प्रभावक जान॥२॥

॥ राग पीलू—ताल दीपचंदी ॥

तीर्थ उजारो अब करीयें, भविक वृंद॥ दाख्यो रे जिनपद, आनंद भरे री ॥ तीर्थ० ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थ प्रकार दोय, थावर जंगम जोय ॥ सिद्धगिरि आदि जोय, दर्श करे री ॥ तीर्थ० ॥१॥ शिखर समेत चंपा, पावापुरी दुःख कंपा ॥ अष्टापद रेवत, जिनंद शिव वरे री ॥ ती० ॥ २ ॥ इत्यादि जिनस्थान, जनम विरत ज्ञान ॥ समज सुजान ठान, भक्ति खरे री ॥ ती० ॥ ३ ॥ थावर तीर्थ रंग, मन धरी अति चंग ॥ संघ काढी महानंद, धर्मशुं धरे री ॥ ती० ॥ ४ ॥ संघकी भक्ति करी, जेजेकार जग करी ॥ पावन प्रभावनासें, उन्नति करे री ॥ ती० ॥ ५ ॥ भरत सागर लेन, महापद्म हरिषेण ॥ संप्रति कुमारपाल, वस्तुपाल नरें री ॥ ती० ॥ ६ ॥ आतम आनंद पूर, करम कलंक चूर ॥ मेरुप्रभ जिन पद, सुखमें वरे री ॥ती० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अति० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम०॥ तीर्थेभ्यो जलादिकं यजा०॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ताल–पंजाबी टेको

॥ शुद्ध मन करो रे आनंदी, विंशति पद ॥ शुद्ध० ॥ ए आंकणी ॥ विंशति पद पूजन करी विधिशुं, उजमणुं करी चित्त रंगी ॥ वि० ॥ १ ॥ ए सम अवर न करणी जगमें, जिनवर पद सुख चंगी ॥ विं० ॥ २ ॥ तपगच्छ गगनमें दिनमणी सरिसो, विजयसिंह विरंगी ॥ विं० ॥ ३ ॥ सत्य कपूरक्षमा जिन उत्तम, पद्मरूप गुरु जंगी ॥विं०॥ ४ ॥ कीर्तिविजय गुरु समरस भीनो, कस्तूरमणि हे निरंगी ॥ विं० ॥ ५ ॥ श्री गुरु बुद्धिविजय महाराजा, मुक्तिविजयगणि चंगी ॥ विं० ॥ ६ ॥ तस लघु भ्राता आनंदविजयो, गाय विंशति पद भंगी ॥ विं० ॥ ७ ॥ खं युग अंक इंदु (१९४०) वत्सरमें, बींकानेर सुरंगी ॥ विं० ॥ ८ ॥ आत्मराम आनंद पद पूजो, मन तन होय एक रंगी ॥ वि० ॥ ९ ॥ इति कलश संपूर्ण ॥

॥ इति मुनिराज श्री आत्मारामजी आनंदविजयजीकृत विंशतिस्थानकपदपूजा समाप्ता ॥

प्रावचनी अरु धर्मकथी, वाद निमित्त सुज्ञान ॥
तपी सिद्ध विद्या कवि, आठ प्रभावक जान॥२॥

॥ राग पीलू—ताल दीपचंदी ॥

तीर्थ उजारो अब करीयें, भविक वृंद॥ दाख्यो रे जिनपद, आनंद भरे री ॥ तीर्थ० ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थ प्रकार दोय, थावर जंगम जोय ॥ सिद्धगिरि आदि जोय, दर्श करे री ॥ तीर्थ० ॥१॥ शिखर समेत चंपा, पावापुरी दुःख कंपा ॥ अष्टापद रेवत, जिनंद शिव वरे री ॥ ती० ॥ २ ॥ इत्यादि जिनस्थान, जनम विरत ज्ञान ॥ समज सुजान ठान, भक्ति खरे री ॥ ती० ॥ ३ ॥ थावर तीर्थ रंग, मन धरी अति चंग ॥ संघ काढी महानंद, धर्मशुं धरे री ॥ ती० ॥ ४ ॥ संघकी भक्ति करी, जेजेकार जग करी ॥ पावन प्रभावनासें, उन्नति करे री ॥ ती० ॥ ५ ॥ भरत सागर लेन, महापद्म हरिषेण ॥ संप्रति कुमारपाल, वस्तुपाल नरें री ॥ ती० ॥ ६ ॥ आतम आनंद पूर, करम कलंक चूर ॥ मेरुप्रभ जिन पद, सुखमें वरे री ॥ती० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अति० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्री परम०॥ तीर्थेभ्यो जलादिकं यजा०॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ताल–पंजाबी टेको

॥ शुद्ध मन करो रे आनंदी, विशंति पद ॥ शुद्ध० ॥ ए आंकणी ॥ विशंति पद पूंजन करी विधिशुं, उजमणुं करी चित्त रंगी ॥ वि० ॥ १ ॥ ए सम अवर न करणी जगमें, जिनवर पद सुख चंगी ॥ विं० ॥ २ ॥ तपगच्छ गगनमें दिनमणी सरिसों, विजयसिंह विरंगी ॥ विं० ॥ ३ ॥ सत्य कपूरक्षमा जिन उत्तम, पद्मरूप गुरु जंगी ॥विं०॥४ ॥ कीर्तिविजय गुरु समरस भीनो, कस्तूरमणि हे निरंगी ॥ विं० ॥ ५ ॥ श्री गुरु बुद्धिविजय महाराजा, मुक्तिविजयगणि चंगी ॥ विं० ॥ ६ ॥ तस लघु भ्राता आनंदविजयो, गाय विंशति पद भंगी ॥ वि० ॥ ७ ॥ खं युग अंक इंदु (१९४०) वत्सरमें, वींकानेर सुरंगी ॥ विं० ॥ ८ ॥ आत्मराम आनंद पद पूजो, मन तन होय एक रंगी ॥ वि० ॥ ९ ॥ इति कलश संपूर्ण ॥

॥ इति मुनिराज श्री आत्मारामजी आनंदविजयजीकृत विंशतिस्थानकपदपूजा समाप्ता ॥

॥ श्री अंतरिक्षपार्श्वनाथस्तवनं ॥

म्हारी रससेलडी ऋषभजिनेश्वर कीयो पारणो । ए देशी ।

म्हारी कल्पवेलडी मूर्ति श्रीअंतरिशपासनी ॥ एक समय लंकापति रावण हुकम आप फरमावे । माली सुमाली विद्याधर वे कार्य करण तस जावेरे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जाय विमान झडपथी तेहनुं जेम गगने गुबारा । मध्यान्हे भोजन वेलाये विमान हेठे उताररे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ तव सेवक मन संशय उपन्यो प्रतिमा घेर विसारी । प्रभुपूजन विना भोजन न करे मुज स्वामी भाग्यशाली रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ वेलु मय मूर्ति निपजावी करी पूजन तैयारी । स्वामीये पूजन करी भोजन लीया शरिर सुखकारि रे ॥ ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ जातां मूर्तिने पधरावी सरोवारमां उ छरंगे । अधिष्टायक देवे अखंडित राखी तिहां उमं गेरे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ एकदिन बिंगलपुरनो राजा श्रीपाल कुष्टि आवे । हाथमुख प्रमुख अंगोने पखाली निजघर जावेरे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ मुखडुं निरोग देखी राणी फरी त्यां जइ नवरावे । कं[illegible] राजानी जोइ [illegible] पावेरे ॥

वलि बाकुल नाखी पटराणी बोली मधुरी वाणी। देवी देव जे कोइ होय ते द्यो दर्शन हित आणी रे ॥ म्हा० ॥८॥ एम करी घर जइने सुती स्वप्ने देवी दिठी। पार्श्वप्रभुनी प्रतिमा इहां छे एम वाणी सुणी मिठी रे ॥ म्हा० ॥९॥ रोगी राजा निरोग थयो ते जिनजी तणो पसाय। ते कारण प्रतिमा काढीने गाडेदियो पधरायरे ॥म्हा०॥१०॥ काचे तांतणे गाडलुं बांधी राजाये थवुं धुरमां। पण पाछुं वालि जोया विना जवुं जरुर निज पुरमां रे॥म्हा०॥११॥ जो पाछुं वालिने जोसे तो प्रतिमा तिहां रहेसे। भुल्यो बाजीगर जेम सोचे तेम चिंता दुख सहेसेरे ॥ म्हा० ॥१२॥ एहवुं स्वप्न देखिने राणी निद्रामांथी जागी। प्रेम धरिने देवगुरुनुं स्मरण करवा लागीरे ॥ म्हा० ॥ १३ ॥ तेमज करी पृथवीपति चाल्यो बोजथी हाथ न हाल्यो। संका उपनी प्रतिमा केरी मुखवाली तिहां भाल्यारे ॥ म्हा० ॥१४॥ प्रतिमा अधर रही त्यां आगल गाडुं निकली चाल्युं। विना विचारी कीधुं ते राजाना दिलमां साल्युंरे ॥ म्हा० ॥ १५ ॥ पण प्रतिमा उपर प्रीतिथी श्रीपुर नगर वसावी। रहेवा लाग्यो त्यां परराजा नगर

लोकने हसावीरे ॥ म्हा० ॥ १६ ॥ चैत्यप्रतिष्ठा महोछव कीधो जगमां यश बहु लिधो । प्रतिदिन त्रिकाल पूजा करीने निजभव सफलो कीधोरे ॥ म्हा० ॥ १७ ॥ ते कालेपाणीहारी बेहड्ड लई निचे जै शक्ति । हवणे तो अंगलोहणु निकले दिप सिखा जुवो जगतीरे ॥ म्हा० ॥ १८ ॥ दुखम कालमें एम प्रभुनी मूर्त्ति अधर बिराजे । ते कारण अंतरिक्षपासजी नाम जगतमां गाजेरे ॥ म्हा० ॥ १९ ॥ ते प्रभुनी यात्रा करवाने अमलनेरथी आवे । रुपचंद मोहनचंद पोते संघ लइ शुभ भावेरे ॥ म्हा० ॥ २० ॥ संवत ओगणीसें छपनना महाशुदि दशमी सारी । लक्ष्मीविजय गुरुराज पसाये हंस नमें वारंवारीरे ॥ म्हा० ॥ २१ ॥

॥ श्री अंतरिक्षपार्श्वनाथ स्तवनं ॥

प्रभु मुखचंद्रे लाग्यो मुने प्यार २ चंद्रे लाग्यो२ ॥ ए अंचली ॥ हुं पापी बहु पाप करीने २ आव्यो तुमारे दरबार २ प्रभु० चंद्रे० ॥ १ ॥ लाख चोरासी योनि गुफामें २ दुख सह्या म्हे कृपाल २ प्रभु० चंद्रे० ॥२॥ क्रोधादिक चोरे हरी लीधी २

रत्नत्रयी वहु वार २ ॥ प्र० चं० ॥ ३ ॥ राग द्वेष रुप मल्ल हरावे २ तेहनो करो सहार २ ॥ प्र० चं० ॥ ४ ॥ श्री अंतरिक्ष प्रभु पार्श्व जिनेश्वर २ आभ वदुख निवार २ ॥ प्र० चं० ॥ ५ ॥ मुजने पण अंतरिक्षे धरीने २ लोकांते राखो आवार २ ॥ प्र० चं० ॥ ६ ॥ विज्यानंद सूरीश्वर केरा २ लक्ष्मी विजयजी अणगार २ ॥ प्र० चं० ॥ ७॥ तस च रणांबुज हंस नमे छे २ संपत्ति द्योने अपार २ ॥ प्र० ॥ चं० ॥ ८ ॥

॥ श्री अमलनेरमंडण श्री गीरुवा पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ गजरामारुनी देशी ॥

नगर अमलनेर सोभता रे, श्रीगीर्वापासजी देव ॥ भाव सहित नित्य राखीये रे, प्रभु सेवा करवा टेव रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ श्याम सुंदर छबी दिपती रे, जाणे रिष्ट रत्न झलकार ॥ दर्शनथी 'दुरगति टले रे, वंदनथी होय भव पार रे ॥ वंद० ॥ २ ॥ लोह समा जड जिवने रे, प्रभु पारसम्

णि सम थाय ॥ जडता दुर निवारीने रे, कंचन सम करे तस काय रे ॥ कंच० ॥ ३ ॥ रुपाना मांडवा विषे रे, तख्ते बेठा महाराज ॥ धर्म चक्री पणुं भागवे रे, जाणे बेठो चक्री समाज रे ॥ जाणे० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथना नामथी रे, संकट सघलां मटी जाय ॥ मनसुधे सेवा थकी रे, हंस सम उज्व बनी जाय रे ॥ हंस० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री शिरसालामंडण श्रीसूर्यमंडण पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ समेतशिखरजिन वंदिये ॥ ए देशी ॥

सूरज मंडल प्रभु पासजी, गाम शिरशाले बिराजे रे ॥ पांत्रीश वाणी गुणे करी, मेघ ध्वनि परे गाजे रे ॥ सूरज० ॥ १ ॥ सूर्य समान-भामंडले, पाप तिमिर नसावे रे ॥ भव्य जीव रुप कमलने, प्रभुजी आप हसावे रे ॥ सू० ॥ २ ॥ सूर्यरेखा जस हस्तमां, चक्ररत्न परे शोभे रे ॥ ते देखी भय भ्रांतथी, कर्मशत्रु सर्व थोभे रे ॥ सू० ॥ ३ ॥ सूर्यपरे अति झलकता, भवोदधि आप

सुकावे रे ॥ तेह जोइ लाज्यो थको, अगस्ति दिल दुखावे रे ॥ सू० ॥ ४ ॥ सूर्य जेवा जिन जोइने, हंस चित्त चमकावे रे ॥ आशा फली मन मानतो, प्रभुजि तणा गुण गावे रे ॥ सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअमरावतिमंडण श्रीपार्श्व- ॥ नाथ स्तवनं ॥

॥ राग होरी—बाजत रंग वधाइ नगरमां बाजत रंग वधाइ ॥ ए चाल ॥

होवत मंगल चार, नगरीमां होवत मंगल चार ॥ ए अंचली ॥ श्रीमत् पार्श्वजिनेश पसाये, अमरावतीमा सार ॥ नगरी० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधु शुध धर्म एं, मंगल चार प्रकार ॥ न० ॥ २ ॥ इंद्र भुवन सम देवल मांही, फाग गावे नर नार ॥ न० ॥३॥ रंगमंडपमां रंग उडत हे, केशर केरा अपार ॥ न० ॥४॥ ताल मृदंग सारंगी साथे, होय संगीत रसाल ॥ नं० ॥ ५ ॥ इण विधि प्रभु भक्तिका होवे, अनंत फल विस्तार ॥ न० ॥

६ ॥ सामंत मालसी सुत संघ लावे, आकोलाँथी आवार ॥ न० ॥ ७ ॥ संवत ओगणीसो छपन की, श्रीविक्रमकी साल ॥ न० ॥ ८ ॥ फागण सुदि तेरस बुधवारे, प्रभुजि परम दयाल ॥ न० ॥ ९ ॥ तेविसमा प्रभु पासजी केरा, दर्शन कीया म नोहार ॥ न० ॥ १० ॥ हंस कहे यह मंगल गावे, तस घर मंगल माल ॥ न० ॥ ११ ॥ इति ॥
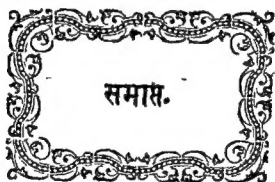
आ पुस्तक अगाउथी खरीद करी आश्रय आपनारनां नामोनी नोंध.

१०० शा लालचंद मोतीचंद-धुळीआ
५१ आचार्य महाराज श्रीआत्मारामजी जैनशाळा हा. गुलालचंद पीतांबर-डभोई
२५ बाई वीजळी बाई-वडोदरा
२५ शा. मगनलाल खेमचंद-आमलनेर.
२५ जैनशाळा खाते हा-खीमजी भीमसी-धुळीआ.
२५ शा चुनीलाल रायचंद-आमलनेर
२० लाभचंदजी कोचर-बीकानेर
२० श्री जैनशाळा तरफथी शा. जीवण देवाजी-बारडोली
१५ शा हर्षचंद गुलाबचंद-तिलारा
११ शा. हीरशी रतनशी-धुलीआ
११ शा केशवजी भारमल-धुलीआ
११ शा. मुखणभाई वेलचंद-आमलनेर
११ संघवी कुंवरजी शामजी-आकोला
१० शा. खुबचंदजी मथवीराज— धुलीआ
१० बाई देवकोर ,,
१० शा कनीराम गुलाबचंद ,,
१० शा आणदजी नरसी ,,
१० मथवीराज खुबचंद ,,
१० शा फोजमालजी मानमलजी मारवाडी ,,
१० शा. रतनशी पीतांबरदास ,,
१० शा हकमाजी बुदाजी ,,
१० शा खेतशी पुनसी ,,
१० शा गुलाबचद बलाखीदास ,,

१० शा उभैयाभाइ राघवजी
१० जेशंगभाइ ठाकरशी-कपडवणज
१० शा. रामभाउ मोहनचंद-शीरसालाझाडी
१० शा. गुलाबचंद मोतीचंद-शीवपुरवघारी
१० शा. दीपचंद पानाचंद ,,
१० शा. कीशोरभाइ छगनलाल-शीरसाला.
१० महाराजमल फगुमल सराफ-भावडा
१० झवेरी राधाकृष्ण पनालाल ,,
१० श्री संघ खाते ,,
१० जैनानंद कल्याण सभा-मांडल
१० जैन सदनी शाळा-वडोदरा
१० गुलाबचंदजी विलावनजी-उदेपुरवस
१० बाइ चीमनाबाइ—एवला
१० शा. धनाशा लखमीचंद-एवला
१० शा पदमशी देवशी-खानगाम
१० शा छेनाजी कृष्णाजी—उड
५ माणजी देवजी-धुलीआ
५ डगडुशा तीलोकचंद—आमलनेर
५ आनंदविजय जैनशाळा-एवला
४ रावबाहादुर कालकादास बद्रीदास-कलकत्ता
४ चतुरभुज देवजी-आकोला

परचुरण नकलोवाळा भाइओनां गामवारनी नोंध

१२ धुलीआ. १५ आकोला ९ उमरावती. ७ वडोदरा
मालेरकोटला. ५ आमलनेर. ५ समी. २५ जुदा जुदा गामोनं